मानव मन्दिर

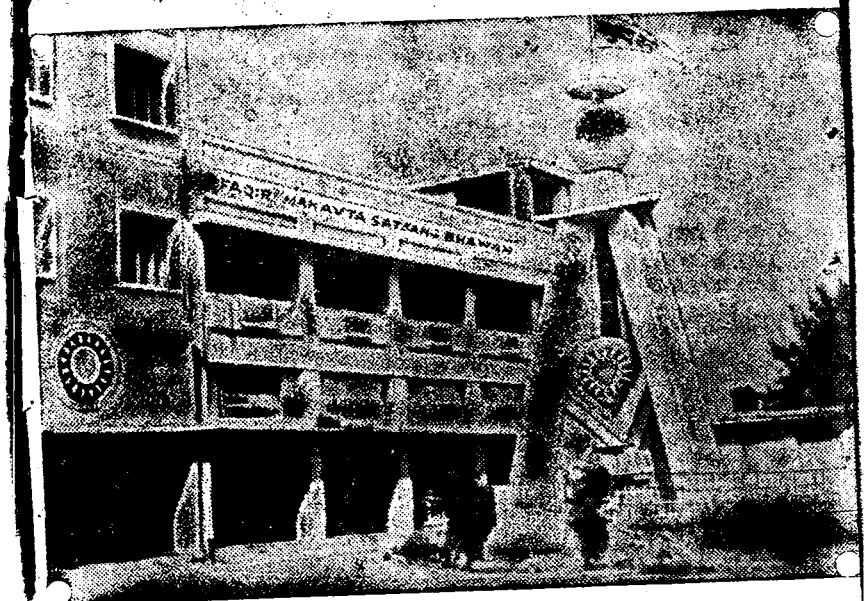

फकीर लायब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट

सुतेहरी रोड, होशियारपुर

FORM

(See Rule 8)

Place of Publication	Hoshiarpur
Date of Publication	10th of every month
Periodicity of Publication	Monthly
Printer's Name	Dr. Paras Ram Aggarwal
Nationality	Indian
Address	Manavta Mandir, Hoshiarpur
Editor's Name	Dr. Paras Ram Aggarwal
Nationality	Indian
Address	Manavta Mandir, Sutehri Road Hoshiarpur.
Name and address of individuals, who own the Manav Mandir or partners or shareholders, holding more than one Percent of the total capital.	Faqir Library Charitabl Trust, Hoshiarpur.

I, Dr. Paras Ram Aggarwal hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Dated : 10-5-85 *Signature of Publisher*

Printed and Published by : Dr. Paras Ram at Shiv Dev Rao Press, Manavta Mandir Hoshiarpur for the Faqir Library Charitable Trust, Hoshiarpur

Param Sant Param Dayal Faqir Chand Ji Maharaj

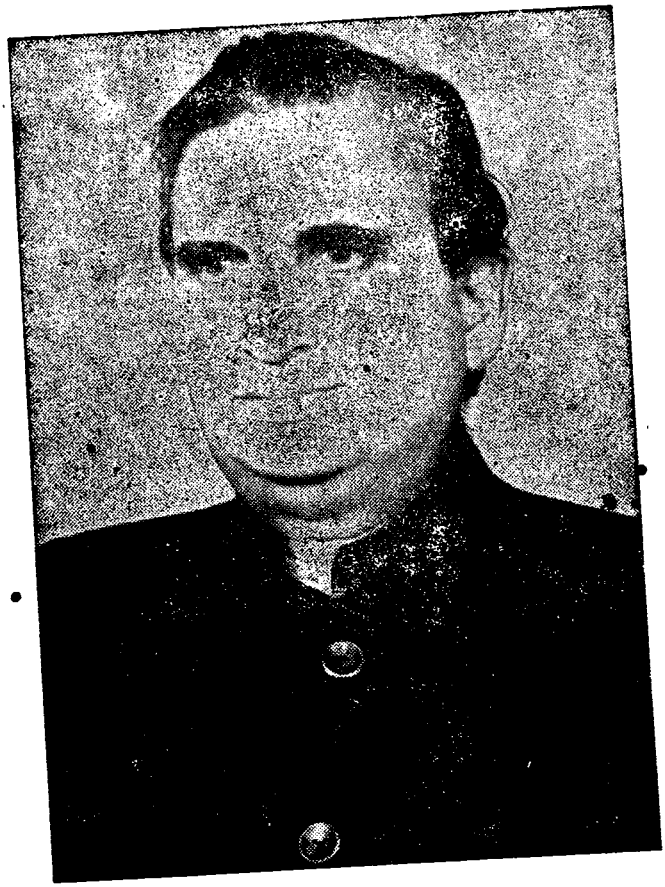

Param Sant Manav Dayal Dr. I.C. Sharma Ji Maharaj

मासिक -

मानव मन्दिर

विश्व में मानव मात्र के सामाजिक सांस्कृतिक
और आध्यात्मिक कल्याण और विकास की
सेवा में संलग्न मासिक पत्र

सम्पादक :
डा० परस राम अग्रवाल

वर्ष 12	शुक्रवार 10 मई 1985	संख्या 1

परमसन्त पूर्णधनी मालिके कुल हजूर दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी वर्मन M.A.,LL.D. के अनमोल वचन

राधास्वामी धाम, 30 फरवरी 1930

मासिक पत्रिका 'सतसंगत'

जुलाई १९३१

गुरु की मोहब्बत

अरे मन रंग जा सतगुरु प्रीत ।
होय मत और किसी का मीत ॥

प्रीत कहते हैं हमदर्दी को, प्रेम और प्यार को। मन को समझाया जा रहा है कि गुरु के प्रेम के रंग को कबूल कर और किसी की दोस्ती का दम न भर। इसका कारण यह है कि संसार ग़रज़ (इच्छा) का नाम है। यहाँ जितने भी जीव मिलेंगे सबके अन्दर किसी न किसी प्रकार की ग़रज़ मौजूद है और उस ग़रज़ के कारण वह अपना रंग

देना चाहते हैं जो एक प्रकार की आधीनता और बन्धन की अवस्था है। सिर्फ़ मुरु की एक ज़ात ऐसी है जिसमें कोई इच्छा नहीं :—

सुर नर मुनि की या ही रीति।
स्वारथ लायें करें सब प्रीति॥

अर्थात् देवता, मनुष्य, ऋषि और मुनि सब का प्रेम स्वार्थ के लिए होता है। आप ज़रा सोच-विचार करके देखो कोई भी स्त्री ग़रज़ से ख़ाली नहीं है। अगर पति में उसके ख़ुश करने की ताक़त नहीं है तो वह कभी भी सच्चे दिल से उसके प्रेम का दम नहीं भरेगी।

पिता अपने पुत्रों को इस इच्छा से पालता है कि वे बुढ़ापे में उसके काम आयें और उसके नाम को क़ायम रखने वाले हों। पिता अपने लायक़ लड़के को लियाक़त और इज़्ज़त का वारिस (हक़दार) होता है अगर किसी का लड़का जज है तो वह जज का पिता कहलाता है। संसार में पिता का प्रेम भी विशेष प्रकार की हैसियत रखता है। मनुष्य यह पसन्द नहीं करता कि कोई उससे बढ़-चढ़ कर हो परन्तु वह यह ज़रूर चाहता है कि उसका लड़का उससे लायक़ बने। अगर यह इच्छा पूरी नहीं होती तो पिता लड़के से सम्बन्ध तोड़ लेता है और उसको घर से बाहर निकाल देता है। इसी प्रकार भाई-बन्धु और दूसरे सम्बन्धियों का हाल समझो।

राजा की यह इच्छा रहती है कि उसके राज्य के सभी प्राणी अपनी कमाई का काफी हिस्सा कर के रूप में उसको

देते रहें और राज्य की आधीनता का दम भरें। अगर ज़रा भी किसी प्राणी में आज़ादी आ जाती है तो राज्य का क़ानून उसको ठीक करने के लिए उसी समय सज़ा देता है। राज्य का यह क़ानून होता है कि राज्य के अन्दर कोई भी प्राणी बेकार न रहे, बराबर काम में लगा रहे ताकि उसका ख़्याल आज़ादी की तरफ न जाये। यह इच्छा है जो राजा के अन्दर सदा बनी रहती है।

आप जिसके प्रेम का दम भरोगे, चूंकि उसके अन्दर इच्छा है वह इच्छा आपको सदा आधीनता की अवस्था में रखेगी और आज़ादी की हवा तक नहीं लगने देगी।

सन्तों की अवस्था इससे बिलकुल अलग है। वे चाहते हैं कि हरएक प्राणी स्वाधीन हो, किसी का मोहताज न हो और उसके दिल से 'जुज़' का ख़्याल दूर हो जाये और 'कुल' की तरफ उसकी नज़र रहे। सन्तों में कोई ग़रज़ नहीं है और अगर थोड़ी देर के लिए मान भी लिया जाये कि उनमें ग़रज़ है तो उनको ग़रज़ यह है कि हर जीव उनकी तरह बेग़रज़ और बेख़्वाहिश बने इसलिए उनकी ग़रज़ को ग़रज़ नहीं कहते :—

पारस में और सन्त में, यही अन्तरो जान।
वह लोहा कंचन करे, ये कर लें आप समान॥

अगर किसी गुरु में ग़रजमन्दी है और वह अपने चेलों के ज़रिये अपनी रोज़ी कमाना चाहता है तो समझ लो कि वह सन्त गुरु नहीं है। ग़रज़ का सवाल आते ही सन्तपना जाता रहता है। अगर किसी फ़क़ीर या सन्त में ग़रज़ का

सवाल है और वह स्वार्थी है तो उसे चाहे और कुछ कह लो परन्तु फ़कीर या सन्त का नाम न दो। सन्तों की ज़ात बेग़रज़ होती है :—

चीस्त तकवा बिशनो ऐ मर्दे फ़कीर।
ला तमा बूदन ज़ि सुलतानो अमीर॥

ऐ मर्दे फ़कीर! इस बात को याद रख कि फ़कीर की असली शात यह है कि वह किसी धनी या बादशाह तक से भी कोई ग़रज़ न रखे।

संसार में कई फ़कीर किसी न किसी प्रकार का परमार्थ का खेल करते रहते हैं वह भी ग़रज़ या इच्छा की नज़र से नहीं बल्कि खेल की नज़र से यह खेल किया जाता है और इस खेल-खेल में वह दूसरों को शामिल करते हुए अपने क्रियात्मक जीवन की मिसाल देते हुए इस खेल को खेलने की हिदायत करते रहते हैं ताकि शिष्य इस संसार के तमाम कारोबार को केवल खेल ही समझे और इसके बन्धन में न आये।

आज़ादी, मुक्ति और निर्वाण यह सन्तों की विशेषता है। जो मुक्त है, मुक्ति की बौलत सिर्फ़ उसी से ही मिल सकती है, जो बन्धन में है वह लाख ज्ञान, ध्यान छाँटे उसकी ज़िन्दगी इच्छाओं से मुक्त नहीं होगी और न ही उसके मने, वचन, कर्म और उसकी अपनी ज़िन्दगी आज़ादी की रग को हरकत देने में मददगार होगी। उसकी सोहबत या संगत में रहने वाला मनुष्य आलम, फाज़ल, होशियार और चालाक तो बेशक हो जाये परन्तु संसार के बन्धनों से अलग

नहीं होगा।

एक कहानी है, किसी राजा के पुरोहित ने राजा को पाँच-सात बार श्रीमद्भागवत की कथा सुनाई परन्तु राजा के मन पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। राजा कहने लगा कि शुकदेव जी ने राजा परीक्षित को सात दिन में भागवत सुनाकर मुक्त कर दिया था परन्तु तुमने मुझको बार-२ श्रीमद्भागवत सुनाई और मैं मुक्त नहीं हुआ। अब फिर सुनाओ और मुझे मुक्ति दो। विद्वान् पंडित ने फिर बार-२ कथा सुनाई परन्तु उसका भी कोई नतीजा न हुआ। तब राजा को क्रोध आया और कहने लगा, अगर तुम मुझे मुक्त नहीं करते हो तो मैं तुमको दण्ड दूंगा। मुझे कल अवश्य ही मुक्त कर दो। पुरोहित अपने घर वापिस आया और दिल में बहुत परेशान था। भोजन का समय आया उसने खाने से इन्कार कर दिया। उसकी एक छोटी लड़की थी उसने भी भोजन करने के लिए कहा परन्तु वह इन्कार ही करता रहा। पूछने पर उसने राजा के क्रोध का सारा हाल सुनाया। लड़की बहुत चतुर थी कहने लगी, आप चिन्ता न करें। चलिये भोजन कीजिये, राजा से कह दीजिये कि मैं तुमको कल मुक्त कर दूंगा। पुरोहित ने ऐसा ही किया और भोजन कर लिया।

दूसरे दिन प्रातःकाल लड़की घर से निकली किसी निर्बन्ध संन्यासी की शिष्या बन गई और भगवा वेष पहिने हुए अपने पिता से बोली "दो रस्सी और एक कोड़ा साथ लेकर जंगल में चलो और राजा को भी साथ ले चलो।

मैं स्वयं वहाँ उसे मुक्त कर दूंगी।"

ऐसा ही हुआ, तीनों जंगल में गये। लड़की ने राजा और अपने पिता दोनों को दो दरख़्तों से बांध दिया। पहले अपने पिता के पास गई और तड़ाक-तड़ाक पाँच-सात कोड़े लगा कर बोली, "राजा को मुक्त कर दो और उसके बन्धन काट दो।" पुरोहित ने कहा "मैं उसकी रस्सी कैसे काटूँ मेरे तो अपने हाथ-पाँव जकड़े हुए हैं।" उसने फिर कोड़े लगाये और कहा "ऐ नादान पंडित! तू शुकदेव नहीं है जिसकी कथा के सुनने से परीक्षित सात दिन में मुक्त हो गया था। 'शुक' कहते हैं आवाज़ देने को। ज़रूरत इस बात की है कि गुरु शब्द-स्वरूप हो और शब्द की तरह बिलकुल स्वतन्त्र हो :—

शब्द गुरु को कीजिये बहुतक गुरु लबार।
अपने अपने स्वाद को ठौर ठौर बटमार॥

ऐ नादान ब्राह्मण! तू शुकदेव की तरह आज़ाद नहीं है, तेरा निशाना आज़ादी नहीं है बल्कि तेरे कथा-वार्ता की ग़रज़ सिर्फ़ पैसा कमाना है इसलिए दुनियावी इच्छाओं का पाबन्द होकर तेरी कथा में वह प्रभाव कहाँ हो सकता है जो शुकदेव जैसे आज़ाद ख़्याल के अन्दर मौजूद था। यह कह कर वह राजा के पास गई और उसे भी सात कोड़े लगाकर बोली "आज़ाद हो जाओ।" उसने कहा "मैं कैसे आज़ाद होऊँ तूने मरे हाथ-पाँव जकड़ रखे हैं।" लड़की ने कहा "नादान राजा तू परीक्षित नहीं है।" परीक्षित कहते हैं परीक्षा-उत्तीर्ण यानि इम्तिहान पास किये हुए को, "तू गुरु के इम्तिहान

मैं कामयाब नहीं हुआ। तू गुरुमत नहीं है मनमत है। परीक्षित गुरुमत था मुक्ति का ख़्याल उसके दिल और दिमाग़ में घर कर गया था इसलिए शुकदेव की हिदायत उस पर असर कर गई। तेरी तो यह हालत है कि अगर गुरु ने आज़ाद नहीं किया तो तू गुरु को सज़ा देने का ख़्याल रखता है। यह तेरी गुरु के प्रति श्रद्धा की हालत है। इसके सिवाय तू जिससे मुक्ति पाने की उम्मीद रखता है वह आप मुक्त नहीं है। ऐसे शख़्स से मुक्ति की इच्छा रखना ग़लती और नादानी है। पहिले मुक्त होने का दिलो-दिमाग़ पैदा कर, गुरु का सच्चा आज्ञाकारी बन। मनमत के नुक्स से अपने आपको पाक-साफ़ कर ले। तेरा मन तुझको सौ नाच नचाता रहता है। तू अपने मन का ग़ुलाम है। अब जब तू गुरु का सेवक नहीं बनता, अपने मन का सेवक बना हुआ है तो फिर मुक्ति की दौलत कैसे तेरे हाथ आ सकती है? मैं मुक्त हूँ इसलिए तुम दोनों को आज़ाद करती हूँ।" यह कहकर लड़की ने दोनों की रस्सियाँ खोल दीं और कहा "क्योंकि तुम क़ैदो-बन्द की हालत को महसूस कर रहे थे और आरज़ी (अस्थिर) आज़ादी का ख़्याल था इस वज़ह से इसी रस्सी की क़ैदो-बन्द से मुझ आज़ाद ने तुमको इस अस्थिर आज़ादी की दौलत भेंट कर दी। अब वास्तविकता को समझो पहिले परीक्षित जैसे दिलो-दिमाग़ पैदा कर लो, परीक्षा में पास हो लो फिर शुकदेव जैसा गुरु तलाश करो। उस वक्त तुमको स्थिर स्वतन्त्रता की दौलत प्राप्त होगी" :—

सतगुरु खोजो रे भाई जग में दुर्लभ रत्न यही।

गुरु बेग़रज़ और आज़ाद शख़्सियत का नाम है। जो शख़्स सच्चे दिल से उसकी मोहब्बत का दम भरेगा उसके शुभ गुणों का भागी बनेगा। वही जज़्बात, वही असरात एक-एक करके उसके दिल के अन्दर पैदा हो जायेंगे और वह अपने गुरु के समान हो जायेगा :—

सेवक स्वामी एकमत जो मत में मत मिल जाय।
चतुराई रीझें नहीं रीझें मन के भाये॥

शब्द की यह कड़ी :—

अरे मन रंग जा सतगुरु प्रीत।
होये मत और किसी का मीत॥

इसी बात की ओर संकेत कर रही है जिसको मोहब्बत (प्रेम) का दम भरोगे उसी जैसे हो जाओगे। जिसका पलड़ा ज़्यादा भारी होगा उसी की ओर झुका रहेगा इसलिए यह कड़ी आपको पूरा यक़ीन दिला रही है कि ऐ मन! गुरु के प्रेम के रंग से तू रंग जा और किसी की मित्रता की ओर ध्यान न दे।

—: सूचना :—

दाता दयाल जी कृत पुस्तक "गुलिस्ताने हज़ार रंग" भाग-१ का हिन्दी अनुवाद, मानवता मन्दिर से बहुत सुन्दर जिल्द में छप चुका है। इसका वास्तविक लागत मूल्य ३०/- रुपये कर दिया गया है। अब यह पुस्तक मानवता मन्दिर होशियारपुर से खरीदी जा सकती है। इसका वी. पी. का खर्च अलग होगा।

नारायण दास डोगरा
जनरल सक्रटरी

सत्संग परमसन्त परमदयाल
पं० फ़कीर चन्द जी महाराज
प्रारब्ध कर्म भोग

ढूंढ मुझको अपने मन में, मैं तो तेरे पास हूँ।
मैं न काशी हूँ न मथुरा, मैं न गिर कैलाश हूँ॥
तू हुआ मेरा तो मैं भी, देख तेरा हो गया।
कर भरोसा मेरा मैं ही, तेरी सच्ची आस हूँ॥
तेरे भीतर मेरी बैठक, आँख से ले देख अब।
मैं नहीं पृथ्वी की मूरत, मैं नहीं अकाश हूँ॥
किस भरम में है पड़ा, निर्भ्रान्ति चित्त से शान्त हो।
आप में हूँ योग युक्ती, आप शब्द अभ्यास हूँ॥
राधास्वामी नाम ले और, नाम में विश्राम ले।
सुख ले और आनन्द ले मुझसे, मैं ही सुख राशि हूँ॥
राधास्वामी !

इन्सान के अन्दर किसी किस्म की चाह है। वह कभी विद्या चाहता है, कभी औरत चाहता है, कभी दौलत चाहता है, कभी मुक्ति चाहता है, कभी राम को मिलना चाहता है,

कभी कुछ चाहता है, कभी कुछ चाहता है। इस कई शक्लें हैं और मुख़्तलिफ़ आदमियों की मुख़्तलिफ़ चाहें होती हैं, मुझे भी थी। इन चाहों को पूरा करने के लिए मुख़्तलिफ़ तरीक़े हैं। दौलत चाहते हो तो काम करो, अगर काम नहीं करते और राम-राम ही सिर्फ़ याद करते रहते हो या धन्य-गुरु, धन्य-गुरु करते रहते हो तो तुम्हारी ग़रीबी दूर नहीं हो सकती, बात सच्ची कहता हूँ। उनको क्या कहूँ? सन्त क्या करते हैं? हम लोग क्या करते हैं? जितने डेरे बने हुए हैं तुम्हारे, अपने मेरे सारे दौलत के लिए ही तो फिरते हैं। बाहर चेलों को मूंडते हैं इसी वास्ते कि चेले हमें कुछ देंगे। बात मैं सच्ची कहता हूँ। इसमें झूठ की कोई बात नहीं है। तो मेरी ज़िन्दगी इस चाह में गुज़री। दुःखी था, बाप की तबियत बड़ी सख़्त थी। ज़रा सी ग़लती की नहीं कि हमको ठोका नहीं। छोटी उमर में ग़रीबी थी चूंकि हिन्दु घर में पैदा हुआ था। ख़्याल था कि राम को याद करो, परमात्मा को याद करो तो तुम्हारे दुःख चले जायेंगे, ऐसा ख़्याल हमको दिया गया था। हिन्दुओं ने भी दिया, सिखों ने भी दिया, औरों ने भी दिया। अपनी मनोकामना पूरी करने के लिए किसी ने सन्ध्या बताई, किसी ने मन्त्र बताये, किसी ने कुछ बताया, किसी ने कुछ बताया, किसी ने कुछ बताया। मुझे अफ़सोस है कि मैं अब अलिफ़, बे, पे, ते, नहीं पढ़ा सकता। तालीम के कई हिस्से होते हैं। मैंने आगे भी कई सत्संगों में कहा कि कुदरत मुझको इस सन्तमत में

दाता दयाल जी के चरणों में ले आई। वहाँ चूंकि इनके मत में तमाम मजहबों का खण्डन था इसलिए मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा। वह जो मेरी ख़्वाहिश थी, मेरी वासना थी कि अपना अनुभव कह जाऊंगा वह मुझे इस ९४ साल की उमर में धक्के दिलाती फिरती है। दसरे, गुरु महाराज ने जो काम दिया था पता नहीं क्यों काम दिया था। मुझे इसका पता नहीं कि मेरे काम से किसी को फ़ायदा पहुँचता है कि नहीं पहुँचता मगर मेरा यह ख़्याल है कि मेरे इस भ्रम को मिटाने के लिए, मेरे दिल में जो चाह थी उस चाह को मिटाने के लिए यह काम दिया। आज आपको कबीर साहिब का शब्द सुनाता हूँ :—

उतते कोई न आइया जासे पूछूं धाय।
इतते सब ही जात हैं, भार लदाय लदाय॥

और इसमें झूठ कुछ नहीं, जो कुछ हम करते हैं उसका बोझ अपने सिर पर ले जाते हैं फिर दूसरे जन्म में उसका कर्म भोगते हैं। इसकी मिसाल कल मैंने आपको आज़ाराम की दी। किसी व्यक्ति ने सौ रुपये पिछले किसी जन्म में उधार लिये। उसके दिल में बेईमानी आ गई और उसने सौ रुपये नहीं दिये। इस जन्म में वह ज्योतिषी बना। उसके पीछे पीठ में एक फोड़ा था। मेरा एक डाक्टर था। मेरी एक आदत है कि मैं जहाँ रहता हूँ वहाँ मेरा एक फैमिली डाक्टर रहता है और सारे सुख-दुःख का ज़िम्मेवार वही होता है। डाक्टर आर्यसमाजी था। मैंने उसको पूछा कि तुम ज्योतिष को क्यों मानते हो ? पहले आर्यसमाजी

ज्योतिष को नहीं मानते थे। अब तो आर्यसमाज की हद हो गई है। पहले वक़्त में यह सबका खण्डन करते थे लेकिन वह वक़्त और था। उस वक़्त तक तो आप पैदा भी नहीं हुए थे जिस वक़्त की मैं बात कर रहा हूँ। तो उसने मुझे अपना वाक्या सुनाया। क्या? मैं अनारकली से जा रहा था। फलाने दिन, फलाने वक़्त में एक आदमी काले रंग का, जिसने माथे पर टीका लगाया हुआ था, उसने मेरी पीठ पर हाथ रखा और कहा कि तेरा नाम क्या है? मैंने कहा, आज़ाराम। क्या काम करते हो? डाक्टरी पढ़ता हूँ। वह एक तरफ ले गया और कहने लगा कि मैं ज्योतिषी हूँ। मेरे बारह साल से पीछे पीठ में फोड़ा है, मुझे आराम नहीं आता। जब मैंने ज्योतिष लगाकर देखा तो मुझे मालूम हुआ कि पिछले किसी जन्म में मैंने किसी आदमी से एक सौ रुपया उधार लिया था मगर मैंने बेईमानी करके वह रुपया नहीं दिया। उसके बदले में मुझे फोड़ा है तो मैंने फिर से ज्योतिष लगाया तो मालूम हुआ कि मैंने जिससे रुपया लिया था वह फलाने दिन फलाने वक़्त में अनारकली बाज़ार में तुमको मिल सकता है। उसका नाम 'अ' शब्द से शुरू होगा और वह डाक्टरी पढ़ता होगा। मैं अपना वतन छोड़ के मद्रास से या उत्तर प्रदेश से यहाँ आया हूँ। तुम यह एक सौ रुपया ले लो और फोड़े का इलाज कर दो। डाक्टर आज़ाराम ने मुझसे कहा कि मैंने मज़ाक से सौ रुपया उससे ले लिया और Carbonlotion से उसका फोड़ा दो दिन धो दिया, वह ठीक हो गया। ज्योतिषी ने कहा कि

भई पिछला कर्ज़ा तो ख़तम हो गया अब तुमने मेरा इलाज किया है मेरे पास तो पैसा नहीं है तुम अपना टेवा दे दो मैं जन्मकुण्डली (Horrscope) बना देता हूँ। उसने उसका (Horroscope) (टेवा) बना दिया। आज़ाराम ने कहा कि जो कुछ उसने मेरे बारे में, मेरी पत्नी के बारे में, बच्चों के बारे में लिखा वह सब कुछ ठीक निकला। इससे साबित होता है कि हम जो कुछ इस ज़िन्दगी में अच्छा या बुरा करते हैं वह हमारे साथ जाता है और उसका असर हमारे दूसरे जन्म पर पड़ता है। तुम देखते नहीं हो कई बच्चे पैदा होते हैं शुरू में हो उनको चोरी की आदत पड़ जाती है। कई शरू में ही गुरु नानक जैसे भगत पैदा हो जाते हैं। नहीं समझ में आई ! वह उनके पिछले जन्म के संस्कार होते हैं जो इन्सान के दिमाग़ में आते हैं। कबीर साहिब कहते हैं भई ! वहाँ से तो कोई आया नहीं जिसको हम पूछें या कहें कि तेरे साथ क्या बीती या क्या हुआ या क्या न हुआ ! और यहाँ से सब लोग भार लेकर जाते हैं यानि जो-जो तुम कर्म करते हो अच्छा या बुरा, नेक या बद, जब तुम मर जाते हो तो उसका संस्कार तुम्हारे दिमाग़ के साथ जाता है। इसका सबूत मेरे पास मेरी अपनी ज़िन्दगी है। मैं कोई बात किताबों की नहीं कहता आज मुझे इस मग में काम करते हुए बयालीस साल हो गये। जो मैंने आज़माया वह मैंने कहा। हम लोग दुनिया में जो कुछ करते हैं वह हमारे पिछले जन्म का असर होता है और जो हम अब करते हैं उसका असर हमारे दिमाग़ पर पड़ता है। मैं उसका सबूत

देता हूँ। मैं भूख की वजह से लड़ाई के मैदान में गया। मैंने वहाँ तार के महकमे में काम किया। स्टेशन मास्टरी का कार्य किया, बाप से प्रेम किया, मां से प्रेम किया, अपनी औरत से प्रेम किया, भाई को प्रेम किया। यह भतीजा बैठा है। इसका बाप मुझसे १४ साल छोटा था, मैं उसको अपना लड़का समझता था। इतना मैं बाहर फिरता हूँ आज १८ साल हो गये मानवता मन्दिर बनवाये को, मेरे स्वप्न में मानवता मन्दिर, उसके सेक्रेटरी या उसके कर्मचारी कभी नहीं आये मगर तार का महकमा, और रेल का महकमा मेरे सिर पर हमेशा सवार रहता है। मैं आपको बताता हूँ कि हम भार कैसे ले जाते हैं। सबूत दे रहा हूँ। एक बार का जिक्र सुनाता हूँ आपको। शायद आज कोई छः महीने हो गये स्वप्न में मेरे लिए कोई खाना लाया उस खाने में गोश्त था तो मैं उसके साथ लड़ पड़ा कि भई मैं तो गोश्त खाता नहीं। सुबह उठा, मैंने सोचा कि भई यह गोश्त का स्वप्न क्यों आया ? १९२० में जब मैं बग़दाद जा रहा था सैकिण्ड क्लास का मुसाफिर था तो मैंने बैरे को बोला कि भई मैं Vegetarian (शाकाहारी) हूँ, मुझे Vegetable food चाहिए। उसने मुझे दाल या आलू की सब्जी दी। जब मैंने उसको देखा तो उसमें मछली के टुकड़े थे। मैंने उसको पूछा कि मैंने तुमको कहा कि मैं शाकाहारी हूँ, मैं अण्डा नहीं खाता, मांस नहीं खाता, मछली नहीं खाता। उसने कहा कि इस मछली को हम शाकाहारी भोजन गिनते हैं। मैंने गु से में आकर थाली फेंक दी। उस वक़्त के गुस्से

का किया हुआ संस्कार मेरे दिमाग़ में मौजूद था, ५० वर्ष के बाद वह ख़्याल मेरे स्वप्न में आया। आप गृहस्थी हैं। मैं आपको कोई ख़ास चीज़ बताना चाहता हूँ जिसके लिए क़ुदरत ने मुझे संसार में भेजा है कि सच्चाई बयान कर जाऊँ। जिस तरह के हमारे संस्कार हैं उनके मुताबिक वह अपने पिछले जन्म के संस्कार ले आते हैं। कई दफ़ा शादियाँ होती हैं पिछले जन्म के जहाँ-२ के जिसके संस्कार होते हैं कोई बीबी बनती है, कोई खाविंद बनता है, कोई पुत्र बनता है, कोई भाई बनता है, कोई चाचा बनता है, कोई भतीजा बनता है वह लेने-देने के संस्कार एक दूसरे के पूरे होते हैं। यह बिलकुल सच्ची बात है। अमरजीत अमृतसर का एक लड़का है, U.S.A. में शिकागो के पास एक जगह है वहाँ बिजनेस करता था। बड़ा अमीर आदमी है, वह अभ्यास करता था। उसको मां ने ६-७ वर्ष की उमर से उसे व्यास में जाकर अभ्यास करना सिखा दिया और वह २४ घण्टे अभ्यास करता रहता। परीक्षा में वह कई बार फेल भी हो गया। जब M.A. में आया तो उसकी मां मुझे जानती थी उसने कहा कि तू बाबा जी के पास चला जा, वहाँ उनसे मिलना। वह मेरे पास आया। मैंने कहा बरखुर्दार तुमसे एक बात कहता हूँ, तुम अभ्यास छोड़ दो। तू अभ्यास के लायक नहीं है। दुनिया में कामयाब रहेगा तू। मैंने कहा, तू अभ्यास छोड़ के ब्रह्मचर्य का पालन कर, पढ़। वह बड़ा लायक आदमी हो गया। वह शादी कराने के लिए आया। देखो, मैं तुमको बातें बताता हूँ। तो उसने

अख़बार में नोटिस दिया। एक लडकी थी जो अब उसकी Wife है। उसका बाप लड़की की शादी के लिए बड़ा फ़िक्रमंद था। लड़की समाज कल्याण विभाग में काम करती थी, B.A. पढ़कर नौकर थी। लड़की ने बाप को कहा कि आप फिक्र मत करो मेरा ख़ाविंद अमेरिका से आयेगा और मुझको अमेरिका ले जायेगा यह मैंने रात को स्वप्न में देखा है। उसने नोटिस दिया तो उसने उसे बुलाया, लड़की का रिश्ता तय हो गया। लड़के की मां, बहिन लड़की को देखने के लिए देहली गये। इन्होंने उनके साथ अच्छा सलूक नहीं किया यानि साड़ी, रुपया वगैरह जो कुछ देना होता है वह इन्होंने नहीं लिया और रिश्ता करने से इन्कार कर दिया। अमरजीत मेरे पास आया मैंने कहा, देख तू चुपके से वहाँ चला जा और वहाँ कोर्ट में शादी करके अपनी Wife को सीधा अमेरिका ले जा। मैंने उसको यह सलाह दी। जब उसके मां-बाप को यह पता चला कि बाबा ने यह सलाह दी है तो वह शादी के लिए मान गये। उधर जब इन्होंने शादी से इन्कार कर दिया तो बाप रो रहा था। लड़की ने बोला कि मंगलवार को सुबह मेरा पति आयेगा मेरी शादी उसी के साथ होगी। शादी उसके साथ हो गई। उसका टेवा भृगुसंहिता में निकला। उसमें लिखा था कि यह औरत उस आदमी की पिछले जन्म में भी औरत थी। समझ गये मेरी बात को कि मैंने आपको इतनी सारी मिसालें क्यों दीं ? सिर्फ़ कबीर की इस बात को साबित करने के लिए कि हम लोग जो कुछ भी यहाँ करते हैं उसका संस्कार अपने

साथ लेकर जाते हैं। इसवास्ते सन्त यह कहते हैं कि यदि तुम मोक्ष चाहते हो, इस जन्म-मरण से बचना चाहते हो तो इन संस्कारों को छोड़ो। अब वह संस्कार कैसे छूटेंगे :—

उतते कोई न आइया, जासे पूछूं धाय।
इतते सब ही जात हैं, भार लदाय लदाय॥
उतते सतगुरु आइया, जाकी बुद्धि मत धीर।
भवसागर के जीव को, खेंच लगावें तीर॥

कबीर साहिब कहते हैं कि उतते कोई नहीं आया मगर उतते सद्गुरु आया। उसमें सिफ़्त क्या है? कि उसके जो अनुभव हैं, बुद्धि है, अक़्ल जो है वह निर्मल है, साफ है और गम्भीर है। वह क्या करता है? कि जो जीव इस मन के चक्कर में फंसा हुआ है, भवसागर कहते हैं हस्ती के समुद्र को। तुम्हारे मन का जितना ख़्याल है, जितने विचार हैं, अच्छे या बुरे, जो कुछ हम करते हैं यह हमारा भवसागर है। हमारा भवसागर यह है और दुनिया का भवसागर यह सारी दुनिया है। योग से हमारा भवसागर हमारे अपने ख़्यालात का है जिस पर असर पड़ता है बाहर के भवसागर का। दूसरे के ख़्याल का असर पड़ता है न! पड़ता है। हमारा दूसरों पर पड़ता है। यह सारा भवसागर है। वह कहते हैं कि सद्गुरु आदमी को धीर बँधा कर इस भवसागर से पार करना चाहता है। अगर आप लोग मेरे पास आये हैं तो क्या भवसागर से निकलने के लिए आये हैं? नहीं! मैं बेवकूफ़ हूँ जो आम दुनिया को सन्तमत की तालीम देता

हूँ मगर मेरे वश की बात नहीं। दाता ने कहा था तालीम बदल जाना। बाबा सावन सिंह जी ने कहा था कि निर्भय होकर काम करना। अब मैं ऊँचा चला गया। अब मुझसे अलिफ़, बे, पे, ते पढ़ाई नहीं जाती। मैं आपको शब्दों में बताता हूँ जिनकी थोड़ी बहुत बुद्धि है अगर वह समझना चाहते हैं तो वह समझ सकते हैं। बाकी रह जाता है उनका अमल कि वह कैसा करें! तुमने बुलाया मैं आ गया :—

कौन किसी के आवे जावे, दाना पानी खींच लावे।

यह कर्म पिछले जन्म का हमारा, तुम्हारा सबका साथ होगा वह करता है गुरु जो धीर है :—

गागर ऊपर गागरी, चूल्हे ऊपर द्वार।
सूली ऊपर साथरा, जहाँ बुलावे यार॥

जब तक कोई सूली नहीं चढ़ता तब तक वह इस जन्म-मरण के चक्कर से, द्वैत या त्रिगुणात्मक जगत् से पार नहीं हो सकता। अब आप कहेंगे कि वह सूली क्या है? सूली में जब फाँसी देते हैं तो क्या होता है? आदमी को पट्टे पर खड़ा कर देते हैं, गले में रस्सा डाल देते हैं फिर पट्टे को खींच देते हैं वह लटक जाता है। उसको कहीं भी कोई सहारा नहीं होता है यही है न सूली! इसी तरह से जब तक कोई आदमी अपने आपको तमाम सहारों को छोड़कर तुमको कहता हूँ अजीत सिंह। तुमने बुलाया, तुम अभी इस बात के काबिल नहीं हो मगर किसी ने यह कहा है कि सौ वर्ष की इबादत से ढाई घड़ी का सत्संग बेहतर होता है। यही बाबा सावन सिंह जी कहा करते थे और यही सब सन्तों का हाल है। मेरी सौ वर्ष की इबादत है उसका सत्संग

तुमको ढाई घड़ी में दिये जाता हूँ। जब तक कोई सूली पर नहीं चढ़ेगा, सूली पर चढ़ने के क्या मायने ? कि जिस तरह हम लोगों को सूली पर चढ़ाते हैं यानि उसका कोई सहारा नहीं रहता है न पाँव का सहारा है, न हाथों का सहारा है, कोई सहारा नहीं, इसी तरह से हमारी सुरत हमारा जो Self है यह जिस्म, मन, ख़्यालात, रूप-रंग सब किसी का सहारा छोड़ देगा तब वह जिस अवस्था में जायेगा वह अवस्था है आदि अवस्था। जन्म-मरण से रहित और जिसे अकाल पुरुष कहते हैं या अनामी बुरुष कहते हैं या मुक्त अवस्था कहते हैं या जिसका कोई नाम नहीं, सब नाम उसके हैं यह आपको बताये देता हूँ। जब तक तुम किसी चीज़ का सहारा लिये हुए हो तब तक तुम अपने उस असली घर को, जहाँ से हम आये हैं वहाँ नहीं पहुँच सकते हो। तुमको सत्संग कराये जाता हूँ यह लोग उसके अधिकारी हैं या नहीं हैं। तुमने मुझे बुलाया; खर्च किया, मैं अपना फ़र्ज़ पूरा किये दे रहा हूँ। पढ़ो उस कड़ी को वह क्या कहते हैं :—

गागर ऊपर गागरी, चूल्हे ऊपर द्वार।
सूली ऊपर साथरा, जहाँ बुलावे यार॥

हमको अगर अपने घर जाना है तो हमको किसका सहारा पकड़ना पड़ेगा ? पहले बाहरी कामिल इन्सान का ! वह तुमको राज़ देगा, भेद देगा और सच्चाई बयान करेगा फिर जो जाने वाला है उसको नाम देगा :—

तीन सुन्न के पारा, वो है देश हमारा।

राधास्वामी दयाल की वाणी में लिखा हुआ है। वह

तीन सुन्न क्या हैं ? (१) शारीरिक (२) मानसिक—मन के ख़्यालात (३) प्रकाश में ख़्यालात यानि आत्मा के ख़्यालात। जब तक हम इन तीनों में से किसी एक का सहारा लिए बैठे हैं तब तक हमारी जो असली आदि अवस्था है, हमारी जो जात है उसमें हम नहीं पहुँच सकते हैं। इसवास्ते बार-२ हुकम दिया जाता है कि जीवित गुरु को ढूँढ़ो। राधास्वामी मत में मरा हुआ गुरु काम नहीं देता है। उनकी इज़्ज़त करते हैं. उनकी वाणी को सुनते हैं, समझते हैं मगर उसमें असलियत नहीं है। ज़िन्दा कामिल गुरु की ज़रूरत है जो अधिकारी को सच्चाई बयान करे। आख़िर मेरा, तुम्हारा कोई रिश्ता तो नहीं है, कोई जात-बिरादरी नहीं, कोई भाईचारा नहीं, किसी की कोई वाकफ़ियत नहीं है। तुमने मुझको इतना रुपया खर्च करके वहाँ से बुलाया है। मैं खुशनसीब आदमी हूँ, मेरे पास थोड़े-बहुत पैसे थे मैंने तुम्हारे घर का टुकड़ा खाया, तुमको पेश्तर पैसे दे दिये ताकि मेरे ऊपर कोई बोझ न आये चूँकि तुमने मुझे बुलाया है इसवास्ते मैं अपनी ड्यूटी पूरी कर देना चाहता हूँ। सन्तों का मार्ग क्या है ? हम इस दुनिया से हमेशा के लिए कब बच सकते हैं और कैसे बच सकते हैं तथा दुनिया में रहकर कैसे सुखी रह सकते हैं ? दोनों चीज़ें मैं आपको बताता हूँ। (१) दुनिया से पार होने की और (२) दुनिया में सुखी रहने की। यही है राधास्वामी मत। वह कहते हैं :—

लोक-अलोक पाऊँ सुख धामा,
चरण शरण दीजे विश्रामा।

लोक में भी और परलोक में भी हम सुख से रहें यह गुरु की महिमा है। इसको कौन बताता है? इसको ज़िन्दा गुरु बताता है। इसवास्ते जितनी इज़्ज़त और मान है वह इस संसार में केवल गुरु का है बशर्ते कि वह गुरु हो। अगर वह गुरु लोभी है, लालची है, देखो न मैं बाहर जाता हूँ मेरे पास क्या दुनिया परमार्थ के लिए आती है? किसी के औलाद नहीं वह औलाद चाहती है, कहती है मुझे प्रसाद दे दो। किसी के दौलत नहीं है वह कहता है बाबा जी नोट पर दस्तख़त (हस्ताक्षर) कर दो, कोई कुछ कहता है, कोई कुछ कहता है। असलियत और हक़ीक़त के जानने वाले मेरे ख़्याल में बहुत ही कम हैं। गुरु नानक साहिब ने सोलह आने सच कहा है :—

नानक कोटिन में कोऊ, नारायण जिन चीन्ह।

कोटिन (करोड़ों) में कोई होता है जिसे नारायण की चाह होती है। मैं नहीं कह सकता कि आप कोटिन में हैं या नहीं। मगर मैं अपनी ड्यूटी पूरी कर जाना चाहता हूँ क्योंकि तुमने इतना खर्च किया, इतनी तकलीफ़ उठाई, मुझे अपने घर में जगह दी। तुम्हारी बीवी सुबह-शाम मेरी रोटी पकाती है। चार आदमी आ जाते हैं उनको चाय पिलाती है। मैं महसूस करता हूँ मगर मैं अपनी ड्यूटी पूरी किये देता हूँ। अगर तुम बाहर जाना चाहते हो ताकि तुम फिर इस चक्कर से हमेशा के लिए बचो तो वह जो बुद्धि, मत धीर वाला गुरु है वह क्या कहता है? भई सूली पर चढ़ जा, बच्चा सूली चढ़। सूली क्या है? जहाँ तुमको किसी का

सहारा न हो। मगर इस सहारे में चलने के लिए तुमको पहले सीढ़ियों का सहारा लेना पड़ेगा। जब सीढ़ियाँ चढ़ जाओगे तब फिर आगे तुमको सहारे की ज़रूरत नहीं। मैं कोठे पर आ गया। जब मैं नीचे से ऊपर आया तो तेरह सीढ़ियाँ चढ़ कर आया। यह जितने दर्जे हैं—सहस्रदल कमल, त्रिकुटी, सुन्न, महासुन्न, भँवरगुफा, सचलोक, अलख, अगम, अनाम, ये हैं क्या ? ये पौढ़ियाँ हैं। इनमें पहले आदमी को सहारा लेना पड़ता है। पहले बाहर में बाहर के गुरु का सहारा लेना पड़ता है। जिस तरह से आप मेरी बात को सुन रहे हैं असल में सच्ची गुरु भक्ति यही है :—

जाके गुरु के पास बैठो, और वचन उनके सुनो।
जो सुनो उनको विचारो, जो विचारो वह गुनो॥

ऐसा एक शब्द है, स्वामी जी कहते हैं :—

दर्शन करे बचन पुनि सुने,
सुन-सुन कर नित मन में गुने।
गुन-गुन कर काढ़े तिस सारा,
काढ़ सार तिस करे अहारा।
कर अहार पुष्ट हुआ भाई,
जग, भव, भय सब गई गवाई।

यह है असली गुरु भक्ति। बाकी रहा दुनिया के लेने-देने का काम यह दुनिया की बातें हैं :—

गुरु नहिं भूखा तेरे धन का, पर तेरा उपकार करावें।

यह एक संसार का रिवाज है क्योंकि आप यहाँ बैठे हैं यह जगह है अगर दस आदमी और आ जायें तो कहाँ

बिठाओगे? इसलिए जगह बनानी पड़ती है। बाबा सावन सिंह जी ने डेरा बनाया, आगरे वालों ने डेरा बनाया, मैंने डेरा बनाया लेकिन डेरा बनाने का यह मतलब नहीं है कि जिसने डेरा बनाया वह दुनिया को पार कर सकता है। मैं नहीं मानता। पार गुरु नहीं करा सकता है, गुरु सच्ची बात बता सकता है। चेला जब उस पर अमल करेगा तब पार हो सकता है। गुरु ने फूंक मार कर पार नहीं करना। यही बाबा चरण सिंह जी ने सत्संग में बोला था। उनके सत्संगी आते हैं वे कहते हैं कि गुरु ने फूंक नहीं मारना, गुरु ने भेद बताना। यही राधास्वामी मत की वाणी में लिखा हुआ है :—

गुरु ने दीना भेद अगम का,
सुरत चली तज तेज भरम का।
भटका छूटा दारो हरम का,
संशय भागा जनम मरण का।

ऐसे-ऐसे शब्द हैं। तो गुरु क्या करता है? भेद देता है। क्या बताता है? बच्चा सूली पर चढ़ जा। सूली का मतलब यह नहीं कि बच्चा फांसी लगा ले। वह सूली यह है कि अपने आपको जिस्म से निकालो, मन से निकालो, प्रकाश से निकालो, आगे जाओ जो तुम्हारा अपना रूप है। असल में वह है अनामी। मगर जब तक वह इस शरीर में है मैं इस अनामीपने में आधा मिनट या एक मिनट के सिवाय ज्यादा नहीं ठहर सकता। मैं तो अपनी बाबत जानता हूँ। मैं शब्द में ठहर सकता हूँ। वह जो अनामी धाम का शब्द है उसको बोलते हैं 'सार शब्द'। शब्द कई हैं—शब्द तुम्हारे

जिस्म में है हर जगह देखो डाक्टर स्टेथिस्कोप लगाकर देखता है बलग़म है कि नहीं, हर जगह स्टेथिस्कोप लगाता है कि नहीं लगाता ! तो शब्द यहाँ भी होता है। तुम सुनो या न सुनो मगर डाक्टर सुन लेता है कानों में आला लगा कर के। ऐसे ही शब्द हैं घण्टा है, शंख है, मृदंग है, ॐ है या रारंग शब्द है यह जितने शब्द हैं प्राकृतिक हैं और दुनियादारों के लिए चाहिएँ। इसीवास्ते सन्तों ने आम दुनिया के लिए पाँच नाम रखा है। यह पाँच नाम का जो साधन है गृहस्थियों के लिए ज़रूरी है। हरएक दर्जे के अलग-अलग गुण हैं। जो सहस्रदल कमल में अभ्यास करता है उसकी दुनिया की इच्छाएँ पूरी होती हैं। यह मैं क्यों कह रहा हूँ ? लोग यहाँ मेरा ध्यान करते हैं। मेरे तो बाप को पता नहीं होता कि मेरा कौन ध्यान करता है मगर उनके काम बन जाते हैं। इससे साबित हुआ कि यह जो सहस्रकार की जगह है इसमें जो ध्यान करता है उसके मन की आस पूरी होती है। मेरी होती है, सत्संगियों की होती है जो ध्यान करते हैं। यह नहीं कि मेरे ही ध्यान करने से तुम्हारा काम बनेगा। दुनिया बेवकूफ़ है जिस रूप का तुम ध्यान करते हो उसको तुम पूरा मानो। जो शख्स गुरु को सावन सिंह, बाबा चरण सिंह या महर्षि शिवव्रत लाल समझते हैं वे मंज़िल पर नहीं पहुँच सकते। क्योंकि उन्होंने गुरु को इन्सान समझा हुआ है :—

गुरु को मानुष जानते ते नर कहिये अन्ध।
दुःखी होय ससार में आगे जम का फन्द ॥

गुरु किया है देह को, सतगुरु चीन्हा नाहिं।
कहे कबीर ता दास को, तीन ताप भरमाहिं ॥

मैं नहीं चाहता कि तुम फ़कीर चन्द को गुरु मानो। गुरु तुम्हारे अन्दर रहता है। गुरु हर वक्त तुम्हारे साथ रहता है और वह साथ रहने वाली कौनसी चीज है ? हमेशा तुम्हारी ज़ात के साथ जो आदि शब्द कहलाता है वह हमेशा तुम्हारे साथ है। हम और तुम इस जिस्म में फँसे हुए हैं। इस मन के चक्कर में कैसे फँसे हुए हैं ? जीने की आस है समझ गये न ! दुनिया चाहते हैं, पैसा चाहते हैं, औलाद चाहते हैं, इज़्ज़त चाहते हैं, लम्बी उमर चाहते हैं, वह चाहते हैं यह फँसना है। इसलिए कबीर कहते हैं :—

उतते कोई न आइया, जासे पूछूं धाय।
इतते सब ही जात हैं भार लदाय लदाय ॥
उतते सतगुरु आइया, जाकी बुद्धि मत धीर।
भव सागर के जीव को खेंच लगावें तीर ॥

कैसे लगाता है ? वह नाम देता है। क्या नाम देता है ? कि ऐ फ़कीर, तू बावरा मत बन। मुझे कहा करते थे :—

काहे बौराना हाय फ़कीरवा।
तेरे घट में माल ख़ज़ाना तू भया दीवाना ॥

मेरे नाम यह दाता के शब्द हैं। मैं उनसे प्रेम करता था यानि मेरा उनसे इतना प्रेम था जैसे हीर और रांझे का, माँ और बेटे का। वह कहते हैं तू क्यों पागल हो गया है ? यह बात मेरी समझ में नहीं आती थी। इस समझ को देने

के लिए कि गुरु तेरे पास रहता है मुझको यह काम दिया था। मैं न यह दावा करता हूँ कि मैं गुरु हूँ न यह दावा करता हूँ कि मैं चेला हूँ। मैं न अब चेला रहा न गुरु रहा। बात मेरी समझ में आ गई, मुझको शान्ति मिल गई, अपने घर का पता लग गया। मेरा यह अंजाम हुआ, इसको देने की दया दाता दयाल जी की है मगर सबसे ज़्यादा सत्संगी लोग हैं जिन्होंने यह कहा कि मेरा रूप उनके अन्दर प्रकट होकर उनके काम कर जाता है। मेरे तो बाप को पता नहीं होता कि मेरा ध्यान कौन करते हैं। लोग मरते हैं कहते हैं कि घोड़ा लेकर आया, कोई कहता है हाथी लेकर आया, कोई कहता है हवाई जहाज़ लेकर आया, कोई कहता है पालकी लेकर आया मगर मेरे तो बाप को भी पता नहीं होता कि कौन मर गया और कौन नहीं मरा। इसलिए मैंने तालीम को बदल दिया ताकि हम गृहस्थी लोग ग़लत तरीके से लुट न जायें। तुम्हारे अन्दर स्वप्न में मेरे रूप प्रकट होते है। आपने कहा है अगर मैं यह कहूँ कि तेरे स्वप्न में मैं प्रकट हुआ, पाप नहीं तो क्या है? हम गुरु इन गृहस्थियों की बेवकूफ़ी की बातों से नाजायज़ फ़ायदा उठाकर के अपने डेरे, अपनी जायदादें, अपने धाम, अपने पैसे जमा करके अपने पुत्रों को, अपने भाइयों को या अपनी औरतों को देते हैं, यही एक भ्रम था जिसको सन्तमत वालों ने छुपा कर रखा। इसीवास्ते मैं अनामी धाम से फ़कीर के चोले में आया और फ़कीरचन्द के दिमाग़ को हिलाया जिससे सच्चाई दुनिया को बयान कर जाये ताकि जो ग़रीब आदमी है वह लुट न

जायें, बेवकूफ़ न बनें। लेने को तो मैं भी लेता हूँ यह तो कोई बात नहीं है मुझे भी लोग देते हैं मगर जो गुरु चेले का पैसा खाता है या उस पैसे को अपनी औलाद को देता है वह गुरु, गुरु नहीं है। यह मैं बिलकुल बेखौफ़ होकर कहता हूँ :—

शिष्य को ऐसा चाहिए, गुरु को सब कुछ देय।
गुरु को ऐसा चाहिए, शिष्य का कुछ न लेय॥

सत्संग में हम जाते थे। हमें बसरे-बग़दाद से तीन महीने की छुट्टी मिलती थी। हम तीन महीने अपने गुरु के दरबार में रहकर के, वहाँ सत्संग करके, वापिस चले जाते थे। न औरत के पास, न मां-बाप के पास, न किसी के पास जाते थे क्योंकि हमें ज़रूरत थी उस चीज़ को ढूंढ़ने की, कि इस सन्तमत की आख़िरी मंज़िल क्या है? वह है सूली पर चढ़ना। मैं सूली पर चढ़ा। कैसे चढ़ा? किसने चढ़ाया? तुम लोगों ने चढ़ाया, सत्संगियों ने चढ़ाया। जब सत्संगियों ने कहा कि मेरा रूप उनके अन्दर प्रकट हुआ और मैं नहीं था तो मैं सोचने के लिए मजबूर हो गया कि जो कुछ मेरे अन्दर खेल होता है वह सब माया है मगर दुनिया को इस तालीम की ज़रूरत नहीं। तुमने सन्तमत की इतनी किताबें मंगवा के रखी हैं, मैंने किताबों के बर्के काटे हैं तुमने तो किताबों को पढ़ा तक नहीं, किताबों को मंगा के रखा हुआ है। इसवास्ते कबीर कहते हैं कि सूली पर चढ़ो :—

गागर ऊपर गागरी, चूल्हे ऊपर द्वार।
सूली ऊपर साथरा, जहाँ बुलावे यार॥

'गागर ऊपर गागरी' यह कबीर को पता होगा मगर मैं जो कहता हूँ कि यह जिस्म है इसके ऊपर सिर है। समझते हो मेरा मतलब मैं क्या कहता हूँ ? जब सबसे ऊपर चला जाता हूँ तो वहाँ यार बुलाता है। वह यार कौन है ? वह यार है शब्द। उसको 'सार शब्द' बोलते हैं। कोई उसको 'सतनाम' बोल देता है, कोई उसको 'सार-शब्द' बोल देता है। वह न घंटा है, न मृदंग है, न रारंग-सारंग है, न सत्याकार है। वह क्या शब्द है ? उसको कोई बयान नहीं कर सकता है। जिसने सुना, उसने सुना। और वह कब सुन सकता है ? जब वह शरीर को भूल जायेगा, मन को भूल जायेगा, दुनिया की सारी ख़्वाहिशात छोड़ जायेगा उस वक़्त सुन सकता है मगर यह मुश्किल है। मेरे दाता ने लिखा हुआ है :—

'जग में जीव रहे बहुतेरे, पर फ़कीर को देखा'।

इसका फिर इलाज क्या है ? इसका इलाज है किसी वीतराग पुरुष को अपनी खोपड़ी में रखो। वक़्त आने पर यह काम हो जायेगा। एक मन दूध ले लो उसमें इतना सा दही डाल दो १२ घण्टे के बाद या १४ घण्टे के बाद वह एक।

इसमें एक दिन नहीं लगता, सुरत काल में जा वह कहते हैं नामदान, मैं नाम उस तरह से नहीं देता जिस तरह से पिछले ज़माने में दस्तूर था। गो मैं यह नहीं कहता कि वह दस्तूर ग़लत है पर मेरा यह नाम नहीं। मैं जो सत्संग कराता हूँ, जो वचन मुँह से कहता हूँ मेरा वही नामदान

है। जो उसको समझ जाता है और उस पर अमल करता है उसको लाभ है। तो जिस्म से निकलने के लिए क्या करना है ? सिर्फ़ नाम का अजपाजाप जो तुमको गुरु ने बख़्शा है। किसी को राम-राम, किसी को पाँच नाम, किसी को अल्लाहू, किसी को वाहेगुरु। जो भी किसी को बताया है उसका मन के साथ बिना ज़बान हिलाये सुमिरन करना। इससे क्या होगा ? तुम्हारा शरीर सुन्न हो जायेगा। सुन्न के मायने यह हैं कि तुमको अपने शरीर की होश नहीं रहेगी। उसके बाद फिर ध्यान है। मन संकल्प करता है। रात को तुम स्वप्न देखते हो न, शरीर की होश तो नहीं होती मगर मन तो चलता है इसलिए सुमिरन फिर ध्यान। हमारे यहाँ गुरु का ध्यान करो मगर जो गुरु को इन्सान समझता है वह आगे नहीं जा सकता। तुम अगर व्यास के सत्संगी हो तो तुमको मैं यह कहूंगा कि अगर तुमने बाबा चरण सिंह से नाम लिया हुआ है तो जो बाबा चरण सिंह जी का रूप प्रकट होता है उसको बाबा सावन सिंह जी का गोता मत समझो वरना तुम्हारा काम पूरा नहीं होगा। मैंने आपको कबीर साहिब का शब्द सुना दिया :—

गुरु को मानुष जानते, ते नर कहिये अन्ध।
दुःखी होयं संसार में, आगे जम का फन्द ॥

गुरु इष्ट है, जो रूप तुम बनाते हो उसको पूर्ण मानो। अरे दीवानो ! इतना नहीं देखते कि एक औरत है उसका बच्चा उसको देखता है, उससे बात करता है उसकी हालत और है। उसी औरत को उसका भाई देखता है उसके भाई

की हालत और होगी। उसी औरत को उसका बाप देखता है, लड़की समझता है उसके मन की हालत और होगी। उसी औरत को उसका खाविंद देखता है, उससे बात करता है उसके मन की हालत और होगी। उसी औरत को उसका यार देखता है उसके मन की हालत और होगी। इसी तरह से तुमने जैसा गुरु को माना हुआ है तुम्हारा वैसा ही अंजाम होगा। अगर तुम गुरु को सिर्फ़ चरण सिंह या फ़कीरचन्द या महर्षि शिवव्रत लाल आदमी ही सारी उमर समझते रहोगे तो तुम भूल जाओ कि तुम्हारा कल्याण होगा। अगर किसी को मेरे कहने पर शक हो तो उसक. मैं हक़ देता हूँ कि वह बाबा चरण सिंह या अपने-२ गुरु को लिखकर पूछें कि एक बुड्ढा फ़कीर यहाँ आया था वह यह कह गया है। आप बताओ कि वह सच कहता है कि झूठ कहता है ? तुम मुझसे प्यार करते हो, कहते हो कोट ले जाओ जी ! क्या करूंगा मैं कोट का, मैं किसी अज्ञानी जीव से कुछ नहीं लेता। मन्दिर के लिए जो जिसकी मर्ज़ी हो दे मैं उसकी परवाह नहीं करता क्योंकि मन्दिर मेरा नहीं है। मैं तो will लिखकर दे आया हूँ। मेरे बाद मेरे खून का कोई आदमी यहाँ का ट्रस्टी नहीं बन सकता। यह भतीजा मेरा है, मेरे भाई का लड़का है या पोता है यह उस मन्दिर के ट्रस्टी नहीं बन सकते हैं। हाँ ! सेवा करना चाहता है तो कर सकता है उससे इन्कार नहीं, सेवा करे मगर ट्रस्टी नहीं हो सकता। अब मेरी बात को समझ गये कि नहीं ! गुरु करता क्या है ? गुरु इन्सान को सच्चाई बताकर उन जीवों

को जो पार जाना चाहते हैं पार लगाते हैं मगर जो दुनियादार हैं उनके लिए गुरु क्या करता है ? वह कहता है कि पाँच नाम का सुमिरन करो। सहस्रकार में सुमिरन करो, यहाँ वृत्ति जमाकर सुमिरन करो। चाहे राम-राम का करो, चाहे पाँच नाम का करो, राधास्वामी का करो जैसा तुम्हारे गुरु ने कहा है वैसा करो। इस दुनिया को तुम्हारी चाह पूर्ण हो जायेगी। मेरे तजुर्बे में आया है कि जितने लोग मेरा ध्यान करते हैं उनके काम मेरे ध्यान से पूरे हो जाते हैं। ग़रीब थे अमीर हो गये, बेऔलाद थे औलाद वाले हो गये। कई दुःखी आदमी मेरे पास आते हैं। मैं बाहर जाता हूँ लोग कहते हैं बाबा जी, हम यह बड़ा काम कर लें ? मैं कह देता हूँ कि भई यहाँ ध्यान किया करो और अन्दर में मांगा करो मिल जायेगा। जब दूसरे साल जाता हूँ तो कहते हैं कि बाबा जी मेरा काम हो गया बड़ी दया हो गई आपकी। मैं कहता हूँ ध्यान बन गया ? हाँ बन गया। दूसरा कहता है कि मेरा काम नहीं बना। मैंने कहा कि तेरा ध्यान बना कि नहीं बना ? कहता है नहीं बना। मैंने कहा कि ध्यान तेरा नहीं बना तो क्या बाबा सिर मुंडाये। जो कुछ है तुम्हारे अपने ध्यान में है। मैं क्या कह रहा हूँ सच्चाई को सुनने के लिए कौन आदमी तैयार है ? तुम्हारे ध्यान में शक्ति है। इसवास्ते तुम्हारे सुमिरन से, ध्यान से क्या होगा ? तुम्हारी will power बढ़ जायेगी, क़ुव्वते इरादी बढ़ जायेगी क्योंकि तुमसे प्रेम है। इसलिए उस ध्यान से तुम्हारी त्रिकुटी में, सहस्रदल कमल में जाने से तुमको समझ आ जायेगी

और तुम्हारे दुनिया के काम हो जायेंगे। अगर तुम सुन्न में जाओगे जिसे रारंगकार बोलते हैं तो तुम्हें मस्ती आयेगी। जिस तरह शराबी शराब पीकर मस्त हो जाता है उसी प्रकार सुन्न में रहने वाला आदमी मस्त हो जाता है। क्यों मस्त हो जाता है ? जिस तरह शराबी आदमी का मन फुरना ज्यादा नहीं करता उसी तरह से तुम्हारा मन वहाँ फुरना नहीं करेगा इसलिए तुमको मस्ती आयेगी और वहाँ सारंगी की आवाज़ होगी। सारंगी की आवाज़ क्यों होगी ? सारंगी की तारें खींचकर ढीली कर दो फिर तुम गज फेरो आवाज़ नहीं होगी चूँकि चित्त की वृत्ति ऊपर चढ़ जाती है। आसमान के ऊपर दिमाग़ में तो तार-रूपी वृत्तियाँ खिच जाती हैं। उनके ऊपर जब सुरत चढ़ती है वहाँ जो आवाज़ पैदा होती है वह रारंग-सारंग या सारंगी की आवाज़ पैदा होती है। अब आप समझ गये मेरी बात को कि मैं क्या कह रहा हूँ ! परसों भी मैंने बहुत कुछ कह दिया था आज भी कह दिया :-

कौन सुरत ले आवही, कौन सुरत ले जाय।
कौन सुरत है स्थिरे, सो गुरु देहु बताय॥

कबीर साहिब कहते हैं कि कौनसी सुरत हमें यहाँ ले आई और कौन सी चीज़ हमें ऊपर ले जायेगी, कौन वहाँ ठहरायेगी। वह उसका जवाब देते हैं :—

बास सुरत ले आवही शब्द सुरत ले जाय।
और जप सुरत है स्थिरे सो गुरु देही बताय॥

अब देखो, सोचो मेरी बात को। बास सुरत ले आई। आशा ! हम आशा करते हैं। किसी चीज़ की आस करें आस

सुरत हमको यहाँ ले आती है और सुरत को शब्द से लगा देने से हम फिर ऊपर जाते हैं। ध्यान हमको मंज़िल पर नहीं पहुँचायेगा, गुरु का जो रूप है वह हमें मंज़ल पर नहीं पहुँचायेगा। वह सिर्फ़ आपको महासुन्न तक ले जायेगा। महासुन्न से आगे सिर्फ़ शब्द है जो ले जायेगा। वह कहते हैं बास सुरत लेकर आती है और ऊपर जाने के लिए अजपाजाप और ध्यान फिर शब्द। शब्द तुमको ऊपर ले जायेगा जहाँ से हम आये हैं :—

जा कारण में जाय था, सो तो मिलया आय।

जिस चीज़ को मैं तलाश करता था और जिस साधन से सूली पर चढ़ने से मुझको वह चीज़ मिल गई, मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ ओ बेहया फ़कीरचन्द, तू बता वह क्या चीज़ है ? वह है शान्ति ! वाणी में लिखा है :—

चमरिया चाह बसी घट माह।
सतगुरु कैसे धारें पाँय ॥

यह तरीक़ा है बयान करने का। किसी ने किसी चीज़ को बयान किया। कबीर ने अपने ज़माने में अपनी वाणी इस्तेमाल की। बाबा सावन सिंह जी ने अपने तरीक़े से बयान किया, मैंने अपने तरीक़े से बयान किया। दाता दयाल जी आलिम थे उन्होंने इल्मीयत के ज़ोर से अपनी असलियत को बयान किया। मैं अनपढ़ हूँ सादा लफ्ज़ों में बिलकुल सहज तरीके से बता देता हूँ, अनाड़ी से अनाड़ी समझ जायेगा। अमल करे या न करे उसका मुझे पता नहीं :—

जा कारण में जाय था, सो तो मिलया आय ।
साईं से सन्मुख भया, लाग कबीरा पाँय ॥

मुझे नहीं पता कि कबीर का साईं कौन था ? मैं नहीं जानता । अगर कबीर होता तो मैं उससे पूछता कि आप लोगों ने इतनी वाणियाँ कह करके हम ग़रीबों को बेवकूफ़ बनाकर के अपने पीछे लगाया है । वह साईं है हमारा शब्द । जिसे आदि शब्द बोलते हैं जब वह मिल जाता है तो वही साईं है । जब मैं उसमें ग़र्क हो जाता हूँ तो न मैं रहता हूँ न तू रहता है मगर यह हालत कभी दूसरे महीने, कभी तीसरे महीने, कभी तीसरे दिन कभी पन्द्रहवें दिन आती है । वह एक मिनट या डेढ़ मिनट मेरे पास रहती है इससे ज्यादा नहीं रहती । किसी और महात्मा की रहती हो तो मुझे पता नहीं मैं तो अपनी बाबत जानता हूँ । मैंने न किसी की नक़ल की न किसी की प्रशंसा की और न किसी को बुरा कहा । जो मेरे साथ बीती मैं वह कहता हूँ । उस वक्त क्या होता है ? न मैं, न तू । मैं और तू दोनों ख़तम हो जाते हैं । क्या हो जाता है ? यह कहने-सुनने का मज़मून नहीं है । कोई कहे कि मैं वह हो जाता हूँ, कोई कहता है कि मैं परमतत्त्व हो जाता हूँ । यहाँ अपनी हस्ती ख़तम हो जाती है । जिस तरह सूली पर चढ़कर आदमी मर जाता है न ! उसी तरह से अपनी हस्ती को ख़तम करके ज़ात कुल में मिल जाती है :-

वह आवे तो जाये नहीं, जाये तो आवे नाहीं ।
अकथ कहानी प्रेम की, समझ लेहो मन माहीं ॥

वह कहते हैं जब वहाँ पहुँच जाता है तो आना, जाना

बिलकुल ख़तम हो जाता है। मगर वहाँ कौन पहुँचेगा सिवाय प्रेम के। जो आदमी बिना प्रेम के अभ्यास करते हैं उनमें सच्ची लगन नहीं होती, उनके दिमाग़ खराब हो जाते हैं और अज्ञान की भक्ति करने वाले कई देखे हैं। व्यास के सत्संगी हाय जागना, हाय जागना ऐसे करते रहते हैं। उनके दिमाग़ ढीले हो जाते हैं। उन्होंने बाबा सावन सिंह जी की बात को नहीं समझा। यह सन्तमत दुनिया को पागल नहीं बनाता, यह सन्तमत इन्सान को इन्सान बनाता है, बात समझा देता है फिर अमल करना तुम्हारा काम है। अज्ञान की भक्ति का आज भी काम ख़राब है। इसीवास्ते सन्तमत में कोई किताब नहीं है। यहाँ दिल की किताब है और किसी क़ामिल गुरु की संगत की ज़रूरत है, बस। 'सद्गुरु, उसका वचन, और सुनने वाला' सन्तमत में यह तीन चीज़ें हैं। राधास्वामी मत में जो कुछ मैंने समझा यही वह लिखा हुआ है—सद्गुरु, उसकी संगत और उसके वचन। अब शख़्स गुरुआई-गुरुआई करता रहता है उसको अपने अन्तर में सोचना चाहिए कि तू बता, अपने दिल से पूछ कि तू ने क्या समझा! तू दुनिया को क्या बताना चाहता है, क्या तेरा अपना शब्द प्रकट हुआ हुआ है? क्या तू अब शान्त हुआ हुआ है? यह शख़्स सत्संग कराया करता था काफ़ी आदमी थे। मैंने कहा तूने त्रिकुटी देखी हुई है, क्या त्रिकुटी का ध्यान करता है? कहने लगा, नहीं। मैंने कहा तू सत्संग कराता है, तू पापी नहीं तो और क्या है! जब तुमको उस मंज़िल का पता नहीं जिसका तुम सत्संग कराते हो, तो

तेरा सत्संग करना दुनिया को धोखा देना नहीं है क्या ? इस तरह मैं अपने आपको बहुत रोता-पीटता हूँ । मैं जो यह सत्संग कराता हूँ यह मेरा कर्म है। मैंने प्रण किया था कि मैं अपना अनुभव कह जाऊंगा, मैं सन्तों के साथ हाँ में हाँ नहीं मिलाता, न मैं कहता हूँ कि वह ग़लत है, न मैं यह कहता हूँ कि वह ठीक हैं चूंकि जो मेरे तजुर्बे में आया वह सन्तों की वाणी के साथ मेल खाता है इसवास्ते मैं कबीर या इन सन्तों की तालीम की वजह से समझता हूँ। अगर आज मेरे तजुर्बे के साथ मेल नहीं खाता होता तो चाहे मैं नरक में जाता मगर इनके बरखिलाफ़ आवाज़ दे जाता। जहाँ यह धोखा देते हैं मैं साफ कह देता हूँ, डरता नहीं किसी से। नहीं समझ में आती ! देहली में कृपाल सिंह के मकान पर सत्संग हुआ। कुछ उसने कहा फिर मैंने अपना सत्संग दिया फिर मैंने उसके पीछे हाथ लगाकर बात कही कृपाल सिंह ! सच्चा होकर रह, आप तो डूबेगा ही, सारी संगत को भी ले डूबेगा। सारी संगत के सामने मैंने कह दिया। दिल्ली में सत्संग हो रहा था मैंने कहा, सन्त कृपाल सिंह तुम गुरुमुख हो, गुरु नहीं हो ! न तुम जीवों को सत्संग में शामिल करते हो इसवास्ते तुम गुरुमुख हो। गुरु जीव को आज़ाद करता है। गुरु में, गुरुमुख में गुरुमुख की महिमा गुरु से ज़्यादा है क्योंकि गुरुमुख कोटिन जीव उभारता। वह जीवों को इस पन्थ में ले आता है। गुरु पन्थ से आज़ाद कर देता है यही वाणी में एक जगह आया है कि पन्थ ने पन्थाई को खा लिया। क्या मतलब ? सुरत जो

पन्थ में चली थी :—

सुरत हुई अधिकार मगनानी,
पुरुष अनामी जाय समानी।

जो अनामी में जाकर समा गई इसका मतलब पन्थ ने सुरत को खा लिया :—

कौन देश कह आइया, कोई जाने नाहीं।
कह मारग पावे नहीं, भूल पड़े यही माहीं॥

वह कहते हैं इन्सान किस देश से आया है उसको वह नहीं जानता, यह संसार में भूल है। मुझे नहीं पता कि कबीर साहिब का क्या मतलब था कि किस देश से आया है। मैंने जो समझा ऐ भारतवासियो! हो सकता है कि वह सारा का सारा ग़लत हो मुझे दावा नहीं। हम कहाँ से आये हैं? मां के पेट से आये हैं। मां के पेट में बाप के वीर्य का एक कीड़ा गया वह वीर्य का कीड़ा बाप के वीर्य से निकला॥ वीर्य तब तक नहीं बन सकता जब तक खून न हो। खून बनता है खुराक से। खुराक तब तक पैदा नहीं होती जब तक उसमें सूर्य, सितारों की किरणें न हों। तो हमारा जिस्म किससे बना? प्रकाश से बना तो प्रकाश ही आत्मा का रूप है। सुरत और है आत्मा और है। दुनिया ने समझा नहीं कि सुरत और चीज़ है, आत्मा और चीज़ है। मैं एक दफ़ा बग़दाद में था अभ्यास करता था। मैंने दाता को लिखा कि मेरे अनुभव में आया है कि आत्मा और है सुरत और है यदि यह ठीक है तो आप मुझे इशारे में बता दो। दाता ने जवाब लिखा कि जो कुछ तुमने लिखा है वह ठीक है।

दुनिया यह बात सुनने को तैयार नहीं क्योंकि दुनिया मुतस्सब है, दुनिया तेखी है। कोई एक बात जो मोहम्मद साहिब ने कही है तुम इस्लाम का नाम लो सब मुसलमान सुनकर खुश हो जायेंगे, यह कहो कि यह राम ने कहा है तो कभी सुनने के लिए तैयार नहीं होंगे। नहीं समझ में आई! ऐसे ही हिन्दुओं का है, ऐसे ही मुसलमानों का है, ऐसे ही सिखों का है, ऐसे ही सनातनियों का है, ऐसे ही आर्यसमाजियों का है। यह संसार सब मुतस्सब है, यह तेखी है। इनको सच्चाई का इल्म बिलकुल नहीं है और सच्चाई बयान करने वाले बहुत कम हैं। बयान करे भी किसको, सुनने वाला कौन है? तुम आये तुमने मुझे बुलाया, मैंने तुमको कह दिया। यह लोग मेरी बात को क्या समझें। लोग मेरे पास आते हैं यह लड़की आई इसके औलाद नहीं है, दूसरा आया मेरे बच्चा नहीं है, तीसरा आया मैं ग़रीब हूँ। इनको क्या ज़रूरत है इस पन्थ की! इनके लिए यह सुमिरन और ध्यान है। तुम सुमिरन करोगे, ध्यान करोगे जो मांगोगे तुमको मिलेगा। यह दुनिया का काम है। लोग सुमिरन करते हैं, मेरे रूप का ध्यान करते हैं उनके काम बन जाते हैं, मैं हैरान होता हूँ। एक आदमी मुझको मिला कहता है "बाबा तू डाक्टरी दवाई खाता है?" मैंने कहा 'खाता हूँ' पर हम नहीं खाते। तुम क्या करते हो? जब बाल-बच्चे बीमार होते हैं तब आपको याद करत हैं, आप दवाई बता देते हैं हम वह दवाई बाज़ार से ले आते हैं, खाते हैं और राज़ी हो जाते हैं। अब मैं हैरान हूँ कि मेरे तो बाप को डाक्टरी नहीं

आती, जाता कौन है ? यह मेरे तजुर्बे हैं। अब मैं आपको नहीं भारत वालों को कहना चाहता हूँ कि आजकल के गुरुइज्म से बचो। तुमको कोई सच्ची बात नहीं बताता। मैं एक दफ़ा कानपुर गया फिर गाँव में गया। मुझे एक अन्धी औरत मिली उसकी आँखों में काले निशान नहीं थे, सारी आँखें सफेद थीं। कह मुझे कहती है बाबा जी, आपने बड़ी दया की। क्या किया मैंने ? मेरे लड़के को टी० बी० हो गई मैं बहुत दुःखी थी, आप को याद किया आप आये। आपने कहा यह फलानी-२ दवाई लड़के को दे दो यह तीन महीने में ठीक हो जायेगा। मैंने वह दवाई उसको दी और वह ठीक हो गया। अब मैं उसको देख के हैरान हो गया। मैंने कहा बेटी, तू कब से अन्धी हुई है ? कहने लगी २१ साल में। मैंने कहा कि तूने मेरी शक्ल क्या देखी। उसने कहा कि आपके दाढ़ी थी, हाथ में सोटी थी, आपने कोट पहना हुआ था, सिर पर टोपी थी आपका आवाज़ मैंने पहचानी। अब मैं हैरान हो गया कि बात क्या है ? मैं तो गया नहीं, मुझे पता नहीं। इसवास्ते मैं कहता हूँ ऐ सत्संगियो ! तुम्हारे अन्दर ही सब कुछ है। तुम खुद पूर्ण हो, तुम्हारा विश्वास चाहिए सब कुछ तुम्हारे अन्दर है। यही शब्द पहले पढ़ा गया था :—

ढूँढ़ मुझको अपने मन में, मैं तो तेरे पास हूँ।
मैं न काशी न मथुरा, मैं न गिर कैलाश हूँ॥

हरजीत सिंह, जिसकी तलाश में तू फिरता है वह तेरे अपने पास है। न व्यास में है, न होशियारपुर में है, तुम्हारे

अपने पास है। मैंने तुमको मिसालें बता-बता करके सब कुछ बता दिया कोई कसर बाक़ी नहीं छोड़ी। अब मैं खुद हैरान हूँ कि मैं उस औरत को जानता नहीं। वह सत्संग में आती होगी, सत्संग सुनती होगी उसका विश्वास था, उसका लड़का बीमार हुआ उसने अपने अन्तर में ढूँढ़ा। तुम सच्चे बनो, मांगो, वह दयाल है देता है, तुम्हारे अन्तर रहता है, तुम्हारी दिली सच्चाई से और सच्चे प्रेम से सब कुछ मिलेगा। दुनिया मांगो दुनिया मिलेगी। सहस्रदल कमल में ध्यान करो, त्रिकुटी में ध्यान करोगे अनुभव हो जायेगा। अगर शराबी की तरह बेहोश पड़े रहना है तो महासुन्न में चले जाओ, अगर ज्ञानवान् होना है तो भँवर गुफा में चले जाओ, अगर हमेशा के लिए पार होना है तो सत्तलोक में चले जाओ। शब्द को साथी बनाओ। समझ गये मेरी बात को :—

हम चालें अमराबती, टारे टूटे टाट।
आवन होय तो आइयो, सूली ऊपर बाट॥

कबीर साहिब कहते हैं कि भई, मैं चला अमरपुरी अगर किसी को आना है तो आ जाये मगर रास्ता सूली वाला है :—

सूली ऊपर घर करे, विष का करे अहार।
ताका काल कहा करे, जो आठ प्रहर होशियार॥

काल है क्या ? वक्त ! काल नाम Time का है। Time में तब्दीली होती है सुबह, दोपहर, शाम। समय बजता रहता है न ! बजता रहता है। वह कहता है कि जो आदमी इस मंज़िल तक चला जाता है वह वक़्त की तब्दीली में जो कुछ दुनिया में होता रहता है कोई मरे, कोई जिये। यह कहावत है कि 'कोई मरे कोई जिये, ससुरा घोल बताशा

पीवे' । तो यह हाल हो जाता है :—

यार बुलावे भाव से, मोपे गया न जाय।
धन मैली पियू उजला, लाग सकूं न पाँय ॥

कहते हैं यार तो मेरा बुलाता है मगर (धन कहते हैं औरत को) धन यह सुरत मैली है दुनिया की चाहें, दुनिया की ख्वाहिशातें, दुनिया की इज़्ज़त, दुनिया का मान, दुनिया का यै, दुनिया का वो, यह मैली है इसवास्ते यह ऊँचा नहीं जा सकता :—

नाव न जाने गाँव को बाट, बिन जाने कित जाऊँ।
चलते चलते जुग भया, पाव कोस पर गाँव ॥

वह कहते हैं कि वह मैली है रास्ते का पता नहीं, जहाँ जाना है उसका पता नहीं, तरीके का पता नहीं, तू सारी उमर चलती रही, कभी पाठ करो, कभी धर्म करो, कभी गीता पढ़ो, कभी ग्रन्थ साहिब पढ़ो, कभी रामायण पढ़ो, कभी वेद पढ़ो, कभी यह पढ़ो, कभी वह पढ़ो इस तरह करते रहने से काम नहीं बनेगा जब तक सूली पर नहीं चढ़ोगे :—

सतगुरु दीन दयाल हैं, दया करी मोहे आय।
कोटिन जनम का पन्थ था, पल पहुँचा जाय ॥

मुझे गुरु मिल गये, इसने राज़ बता दिया, भेद बता दिया। मुझको ख़्वाहिश थी, मुझको पता नहीं था, दाता दयाल मिल गये मुझे उन्होंने काम दे दिया। इस काम में से तुम लोगों के चरणों की मिट्टी मैंने सिर पर रखी, मेरी बात समझ में आ गई। अब मैं न डरता हूँ, न घबराता हूँ बात समझ में आ गई। यह ज़िन्दगी उसकी है शब्द से

बनी उसमें समा गई तो आज मैंने आपको सत्संग में बहुत कुछ कह दिया, समझ गये मेरी बात को ! मैं दावा नहीं करता कि जो कुछ मैंने समझा वही ठीक है सच्ची बात आपको कहता हूँ । हर शख़्स को हक़ है अपने अनुभव कहने का मगर मैंने जो कुछ कहा अपना आजमाया हुआ कहा, अपनी आपबीती कही हो सकता है कि मेरी अपनी आपबीती मेरे लिए फ़ायदेमन्द है दूसरों के लिए न हो ! यह कह देना कि मैं जो कुछ कहता हूँ सब दुनिया इसको माने, मैं इस बात के बरख़िलाफ़ हूँ । हर शख़्स की प्रकृति अलहदा है, उसके कर्म अलहदा हैं । गुरु बेहतर जानता है कि उसका कल्याण किसमें है । तुमने बुलाया बच्चा ! मैं आ गया । अपनी नीयत से, अपने धर्म से अपनी ड्यूटी पूरी कर चला ताकि मुझपर तुम्हारे बुलाने का कोई पाप न लगे ।

सबको राधास्वामी !

—: सूचना :—

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि 'मानव मन्दिर' पत्रिका के प्रकाशन में बहुत सुधार हो गया है । पत्रिका के वितरण एवं सामग्री के स्तर, दोनों में ही बहुत तरक़्क़ी हुई है । मानवता मन्दिर के बोर्ड आफ् ट्रस्टीज़ के जनरल सेक्रेटरी श्री नारायण दास डोगरा के अथक परिश्रम के फलस्वरूप पत्रिका के मुद्रण में पर्याप्त निखार आया है । मन्दिर की सेवा के प्रति उनका समर्पण, जो चौबीसों घण्टे चलता रहता है, अद्भुत है । मेरी कामना है कि मानवता मन्दिर में सेवा के लिए इनकी ही तरह और अधिक समर्पित व्यक्ति हमें प्राप्त होते ।

—मानव दयाल

करना होता है। इसका वर्ण श्वेत होता है। कुछ लोग जन्म से ही ऐसे होते हैं।

क्षत्रिय कौन है ? जिसके विचार रक्षा करने के हैं, युद्ध जीतने के हैं, उसका लाल वर्ण है, वह क्षत्रिय है लेकिन जब उसको वैराग्य आता है तो उसका वर्ण जोगिया होता है और जब धर्म पर चलने लगता है तो उसका वर्ण श्वेत हो जाता है।

वैश्य कौन है ? जिसके विचार धन कमाने के हैं वह वैश्य है और उसका वर्ण पीला है।

शूद्र कौन है ? जिसके विचार तामसिक हैं, गन्दे हैं, दूसरों को नुक्सान पहुँचाने के हैं, जो नीचता का कार्य करता है, धोखा देता है, चारसौबीसी करता है, वह शूद्र है और उसका वर्ण काला है।

महाराज जी कहा करते थे कि अपने विचार शुद्ध रखो, अच्छा संकल्प करो। विचारों को शुद्ध करने के बाद ही संसार की असारता, भ्रम, भूल-भुलैय्याँ, जायेंगी। यदि किसी का मन शुद्ध नहीं है और मन में ईर्ष्या है, द्वेष है तो ऐसा व्यक्ति गुरु से नाम लेकर जब त्रिकुटी पर ध्यान लगायेगा तो उसके गन्दे विचार, क्रोध आदि अधिक बढ़ जायेंगे।

गोत्र—गोत्र का सम्बन्ध सुरत से है। सुरत कहाँ से आई है ? हमारी सुरत परमतत्त्व से आई है। सुरत का कभी नाश नहीं होता। वह अविनाशी है तथा पवित्र है। सुरत को समझने के लिए मन को शुद्ध किया जाता है। तुम्हारी सुरत तो पवित्र है मगर तुमने शरीर में आकर के शूद्र का

काम किया इसीलिए स्वामी जी महाराज ने कहा कि गोत्र लजाया। अरे सुरत, तूने अपनी पवित्रता को लजा दिया, तुझे शर्म नहीं आई!

परमदयाल जी महाराज परमतत्त्व के अवतार थे। लोगों ने उन्हें पहचाना नहीं, सब लोग उन्हें गुरु समझते रहे। उन्होंने कहा कि मैं गुरु नहीं हूँ, गुरु का काम करता हूँ। वह अवतार थे, अपने आपको गुरु कैसे कहते! दाता दयाल जी ने स्वयं कहा है कि आप देवी-देवता, राम, कृष्ण, शंकर को पूजते हो, पूजो लेकिन इन सब रूपों का एक ही आधार है। उस आधार को ब्रह्म कह दो, पारब्रह्म कह दो, फ़कीरतत्त्व कह दो, मानव तत्त्व कह दो, राधास्वामी तत्त्व कह दो, चाहे कृष्ण तत्त्व कह दो। भगवान् कृष्ण ने भी उसी आधार से आकर के उस समय के मुताबिक इस जगत् में लीला की और बताया कि तुम्हारी सुरत पवित्र है। दाता दयाल जी महाराज ने कहा कि जो लोग सन्तमत में अन्ध-विश्वास रखते हैं वह कृष्ण को काल का अवतार बताते हैं लेकिन कृष्ण भगवान् सत्पुरुष, परमपुरुष के अवतार थे। उन्होंने भूल-भुलैय्यों से निकलने का रास्ता बताया :—

'सखिया वा घर सबसे न्यारा'

शरीर से, मन से और प्रकाशमय आत्मा से भी ऊँचा घर है। वहाँ पर सुख-दुःख, झूठ-सच कुछ नहीं है इसलिए भगवान् कृष्ण के जीवन-चरित्र से झूठ-सच को समझना चाहिए।

दृष्टान्तः—एक बार गोपियों ने भगवान् कृष्ण से कहा कि हम सब आपके गुरु के दर्शन करना चाहते हैं। भगवान् कृष्ण के गुरु यमुना-पार रहते थे। कृष्ण ने कहा कि यदि

तुम मेरे गुरु के दर्शन करना चाहती हो तो फीस देनी पड़ेगी। गोपियों ने पूछा कि क्या फीस होगी ? भगवान् कृष्ण ने कहा कि एक-एक थाल लड्डुओं के बनाकर ले जाओ, वह खायेंगे। सारी गोपियाँ अपने-२ थाल लड्डुओं से भर कर गुरु के दर्शनों के लिए चल दीं। यमुना में बाढ़ आई हुई थी। गोपियों ने कृष्ण भगवान् के पास आकर कहा कि यमुना में तो बाढ़ आई हुई है हम कैसे जायेंगे ? भगवान् कृष्ण ने कहा कि तुम यमुना मैय्या से कहो कि यदि कृष्ण ने मक्खन चुराया नहीं हो और खाया नहीं हो तो रास्ता दे दो। गोपियों ने ऐसा ही किया। यमुना उतर गई और सभी गोपियाँ यमुना पार कर गईं और गुरु के पास गईं। गुरु बहुत लम्बे-चौड़े शरीर वाले थे। गोपियों ने गुरु को नमस्कार किया और लड्डू खिलाने लगीं। गुरु जी सारे लड्डू खा गये प्रसाद के लिए एक दाना भी नहीं छोड़ा। गोपियों ने कहा कि हम आपके शिष्य कृष्ण को अपना गुरु मानती हैं। कहने लगे यह तो बहुत अच्छा है, वह तो पूरा गुरु है। गोपियाँ कहने लगीं हम आपके दर्शनों को आई थीं तो आपके दर्शन हो गये। गुरु जी कहने लगे कि दर्शन हो गये अब अपने घर को जाओ, कोई शक हो, शंका हो तो अपने गुरु से पूछना। वह मेरा ही रूप है, परमतत्व है। बाकी बात वह बतायेगा। सारी गोपियाँ चल दीं। यमुना में बाढ़ आई हुई थी तो गुरु जी के पास लौट कर गईं कि हम कैसे जायें ? यमुना में तो बाढ़ आई हुई है। गुरु जी कहने लगे कि यमुना मैय्या से कहो कि अगर मैंने लड्डू का एक दाना भी नहीं खाया हो तो यमुना मैय्या उतर जाये।

गोपियों ने यमुना मैय्या से आकर ऐसे ही कह दिया। यमुना मैय्या उतर गईं और सारी गोपियाँ यमुना पार करके भगवान् कृष्ण के पास आईं। भगवान् कृष्ण ने कहा कि गुरु के दर्शन कर आये ? कहने लगीं, कर आये। कैसे लगे गुरु जी ? गोपियों ने कहा अच्छे लगे, विशालकाय हैं, खाते-पीते खूब हैं। भगवान् कृष्ण ने कहा कि बताओ तो सही मेरे गुरु जी अच्छे लगे ! गोपियाँ कहने लगीं कि तू भी झूठा, तेरा गुरु महा झूठा। तूने हमारी मटकियाँ तोड़ीं, मक्खन चुराया, मक्खन खाया और कहता है कि मैंने मक्खन नहीं चुराया, न मैंने मक्खन खाया। तेरे गुरु जी भी सारे लड्डू हड़प कर गये और कहते हैं कि मैंने एक दाना भी नहीं खाया।

भगवान् कृष्ण ने कहा कि बस यही तो बात है। किसने खाया ? शरीर ने खाया, मक्खन मन ने चुराया होगा, लेकिन मैं न तो मन हूँ और न शरीर हूँ, मैं तो वह साक्षी हूँ जो भूल-भुलैय्यों से बाहर जाने का ज्ञान देता है।

परमदयाल जी महाराज ने एक दिन के सत्संग में ही मुझे उठा लिया था। मुझे अब कोई भ्रम नहीं है। ज्यों-२ उनकी आज्ञा का पालन करता जा रहा हूँ त्यों-२ मुझे ऐसा लगता है कि वह ताक़त मुझे उठा रही है, मेरे साथ चल रही है और आप सबको उभार रही है। परमदयाल जी महाराज के मिलते ही मैं शब्द से परे हो गया। आख़िर में उन्होंने मुझे कहा "देख तेरी जीवन्मुक्ति की अवस्था आ गई है, तू ज्ञान से भी ऊपर चला जायेगा। आख़िर में तेरी वह हालत आयेगी जब तू और मैं दोनों नहीं रहेंगे लेकिन उसके आने से पहले, ऐ मानव दयाल, तुम्हें सत्संगियों का यह महान् कार्य करना है।"

परमतत्त्व के अवतार आये उन्होंने हमें बताया कि तू देवी-देवताओं को पूजते हो, यदि तुम यह समझ जाओ कि यह सब ब्रह्माण्डी मन का प्रसार है तो देवी-देवताओं को पूजते-२ देखोगे कि यह सब देवी-देवता तुम्हारे अन्दर मौजूद हैं और परमदयाल जी के अन्दर भी हैं इसलिए एक को मानने से सभी देवता उसके अन्दर आ जाते हैं।

जो सन्त का अवतार होता है वह द्रवित होता है। उसकी दया, प्रेम अपने आप बाहर निकलते हैं। परमदयाल जी ने जो प्रकाश दिया है वह सदैव ही जगमगाता रहेगा। जिससे आप भूल-भुलैय्यों से बाहर निकल जाओगे। इसी-लिए सत्संग की ज़रूरत होती है। बार-२ सत्संग सुनने से एक दिन आपका पर्दा हट जायेगा और आपको जीवन्मुक्ति की हालत मिल जायेगी। अब मैं शब्द के मुताबिक आपको थोड़ा सा समझाऊंगा :—

संसार असार में भूला है, संसार असार में सार नहीं।
सब भूल भुलैय्यां हैं भाई, इस भूल का वारापार नहीं॥

इस शब्द में संसार को असार कहा गया है। सार क्या होता है? किसी चीज़ की असलियत को सार कहते हैं। यह संसार है। संसार वह होता है जो बढ़ता चला जाता है, जगत् बढ़ रहा है। हमारा शरीर भी संसार है जो बढ़ता है और एक दिन उसका अन्त हो जाता है लेकिन जो सार है उसका कभी अन्त नहीं होता। बीज बढ़ता है, पौधा बढ़ता है, वृक्ष बनता है मगर बीज मौजूद रहता है। मनुष्य तू इस असार संसार में भूल गया है, तू उस वृक्ष को देख रहा है बीज को नहीं देख रहा है।

अनायास ताप में तपता है, यह घर रैन का सपना है, अनायास ही तूने दुःख पैदा किया है और इस बात को भूल गया कि यह संसार एक सपना है। संसार सपना क्यों है? गुरु की दया से आपके जो बुरे कर्म होते हैं वह स्वप्न में कट जाते हैं। स्वप्न अपने आप में न झूठा है न सच्चा है। जब तक आप स्वप्न देखते हैं तब तक आपको यह शक नहीं होता कि यह झूठा है लेकिन जब आपका स्वप्न टूटता है तो कहते हो कि अरे! यह तो सपना था।

सपने की चिन्ता क्या करना, सपने ही का विस्तार है। सपने की चिन्ता नहीं करनी चाहिए। यह तो बढ़ता जा रहा है। सपने का मतलब यह नहीं कि आप काम न करें। आप सभी काम करें। सपना एक खेल है। स्टेज पर राम लीला होती है कोई रोता है, कोई हँसता है, कोई दुःखी होता है, कोई खुश होता है लेकिन स्टेज पर इसका कोई असर नहीं होता, न दर्शक रोते हैं। इसी प्रकार आपका जो असली आपा है वह स्टेज है, वह अविनाशी तत्त्व है उसमें यह सब खेल खेला जा रहा है। आप खेल देखने वाले द्रष्टा हो। जब यह पता लग जाता है कि मैं द्रष्टा हूँ तो ख़्वाब को असलियत मालूम हो जाती है।

दाता दयाल जी ने फ़कीर को राम, कृष्ण से भी ऊपर बताया है :—

न मैं राम कृष्ण का सेवक, ईश ब्रह्म नहीं जानूं।
मैं तो नाम फ़कीर दीवाना, सबसे बढ़कर मानूं॥

और कहा :—

जो फ़कीर मोहे दर्शन देवे, अपना भाग्य सराहूं ।
अपने तन के चाम की जूती, पग फ़कीर पहराऊं ।।

दाता दयाल जी ने स्वप्न की अवस्था बताई कि स्वप्न क्या होता है :—

क्या है दुनिया ख़्वाब है, और ख़्वाब भी ज़ाते फ़कीर ।
दामे हिरसो मालोज़र में, वो नहीं हरगिज़ असीर ।।

वह भूल-भुलैय्यों में क्यों नहीं फँसे क्योंकि वह जानते थे कि यह सब खेल है। जब आपको भी यह पता लग जायेगा कि यह खेल है तो आप भी रोओगे नहीं, न आपको लालच आयेगा। दुःख-सुख आपके लिए समान हो जायेंगे।

जब सोये स्वप्न का दृश्य लखा,
जब जागे दृश्य तो लोप हुआ।
इस दशा को सोच समझ मन में,
यह भरम का सकल पसारा है।

भरम का सकल पसारा क्या है ? आप सो रहे हैं। स्वप्न आ रहा है, स्वप्न में दुःख हो रहा है, सुख हो रहा है। जब जागे तो स्वप्न ख़तम हो जाता है, सुरत इस स्वप्न में आती है जाती है फिर आती है तो उसका सारा फैलाव है। मन को समझने के बाद दुनिया में रहते हुए भी नहीं रहते :—

यहाँ नहीं कहीं है स्थिरताई, स्थिरता यहाँ कैसे आई ।
है नाशवान हर वस्तु यहाँ, तूने नहीं कभी विचारा है ।।

आपने कभी भी इस बात को नहीं विचारा कि संसार के अन्दर अस्थिरता है। आज जो राम का पार्ट कर रहा है कल रावण का करेगा। रहने वाली जो चीज़ है वह और है, आपके अन्दर मौजूद है आपको उसका ज्ञान हो जाना चाहिए।

सबको राधास्वामी !

मासिक सन्देश

मेरे परम प्रिय सत्संगियो,

राधास्वामी, परमदयाल जी सहाई !

मैं आपको इस महीने का शुभ सन्देश भेज रहा हूँ जो आपको मई १९८५ के मास में मिलेगा। हालाँकि इस सन्देश के पहुँचने तक वैसाखी का उत्सव समाप्त हो चुका होगा। फिर भी मैं आपको इस उत्सव के बारे में कोई सूचना नहीं दे सकता क्योंकि मुझे यह सन्देश छापाखाने में १० अप्रैल १९८५ तक भेजना है इसलिए आपको हताश नहीं होना चाहिए और अगले महीने के सन्देश की रुचि से प्रतीक्षा करनी चाहिए।

मुझे यह मालूम है कि आप सभी मानवता मन्दिर के बारे में नई से नई सूचना प्राप्त करने के लिए और हर महीने मासिक सन्देश से लाभ उठाने के लिए उत्सुक रहते हैं। आप में से कुछ सत्संगियों ने मुझे लिखा है कि मासिक (Monthly) सन्देश उन्हें अपने जीवन को व्यवस्थित बनाने के लिए और आत्मा की उन्नति के लिए बहुत लाभदायक सिद्ध होते हैं। केवल प्रौढ़ व्यक्ति और घर के मुखिया ही मासिक सन्देश से लाभ नहीं उठाते बल्कि युवा पीढ़ी के

लोग और किशोर अवस्था वाले बच्चे भी इस पत्रिका से लाभ उठाते हैं और मेरे विचारों और अनुभवों को रुचि से पढ़ते हैं।

मुझे ख़ासकर भगवद्गीता के अध्यायों की उस शृंखला के बारे में बहुत लोगों की सराहना प्राप्त हुई है जिसमें मैंने सम्पूर्ण भगवद्गीता का संस्कृत श्लोकों से अंग्रेज़ी की कविता में अनुवाद किया है। यह अनुवाद मैंने १० वर्ष से भी अधिक पहले पूरा कर लिया था। लोगों की सराहना का कारण यह है कि मेरा अनुवाद और मेरी भगवद्गीता को आलोचना शुद्ध है और इसमें अनुवाद की दृष्टि से किसी किस्म की मिलावट नहीं की गई है। ऐसा होते हुए भी मेरी व्याख्या पूर्ण रूप से भगवद्गीता के मौलिक ग्रन्थों पर आधारित है। मेरे द्वारा अनुवाद किये गये भगवद्गीता के अध्याय इस बात को प्रमाणित करते हैं कि वर्तमान सन्तमत सनातन धर्म से जुड़ा हुआ है और उसी से विकसित हुआ है। सनातन धर्म का न कोई आदि है और न अन्त है, वो अनन्त और अनादि धर्म है जिसने मानव को आत्मा के रूप में और ईश्वर को परमतत्त्व के रूप में जानने की कोशिश की है। सनातन धर्म हमें पूर्णता प्राप्त करने की विधि बताता है। वेद यह बताते हैं कि मानव आत्मा के रूप में ईश्वर की तरह पूर्ण है। वह अपनी इस पूर्णता को तभी जान सकता है जब वह किसी सत्पुरुष के सम्पर्क में आता है और ख़ासकर ऐसे सद्गुरु के सम्पर्क में आता है जो सत्य को सीधे-सादे शब्दों में बता सके।

सब प्रकार की सच्चाई अवतारों के द्वारा आदिकाल से बतलाई जा चुकी है हालाँकि एक जीवित व्यक्ति से दूसरे जीवित व्यक्ति को सुरत-शब्द योग प्राचीन वैदिक काल से सिखाया जा चुका है। किन्तु यह सरल से सरल विधि जो मानव को परमतत्त्व से मिला देती है, हमारे समय में ही परमतत्त्व के सन्त अवतारों द्वारा अभी-२ सीधे तरीक़े से बताई गई है।

स्वामी शिवदयाल जी महाराज से लेकर दाता दयाल और परमदयाल जी महाराज की सुरत-शब्द योग विधि के द्वारा यह साबित हो चुका है कि राधास्वामी एक अवस्था का नाम है जिसमें आत्मा और परमात्मा जुड़ जाते हैं। दाता दयाल जी महाराज ने इस सच्चाई को बयान करने के लिए हज़ारों किताबें लिखीं।

परमदयाल जी महाराज ने इस सुरत-शब्द योग के द्वारा जो अनुभव किया उससे यह साबित कर दिया कि परमात्मा एक है और अलग-२ धर्मों वाले लोग उसके अनेक रूपों में फँसकर एक दूसरे से नफ़रत करने लगते हैं। परमदयाल जी महाराज ने सीधा और सच्चा मार्ग बताया और कहा कि यदि मानव नेकनीयती से जीवन व्यतीत करे, यदि वह अपने स्वार्थ के लिए झूठ नहीं बोले और दूसरों को धोखा नहीं दे और फिर सुरत-शब्द योग का अभ्यास करे तो एक ही जीवन में पूर्ण-पुरुष बन सकता है। अगर वह शिवसंकल्प के बिना नामदान लेकर अभ्यास करेगा तो वह सुख और शान्ति को प्राप्त नहीं कर सकेगा। परमदयाल जी महाराज ने वह ऊँची से ऊँची अवस्था प्राप्त की जहाँ वो रूहानियत

के सभी दर्ज़ों को पार करके प्रकाश और शब्द से भी ऊँचे उठ गये और उन्होंने बेधड़क होकर बताया कि परमतत्त्व का कोई रंग-रूप नहीं है इसलिए जो लोग गुरु का रूप देखते हैं वे परमतत्त्व को नही देख रहे होते हैं। जो गुरु यह कहते हैं कि उनका रूप सत्संगी को मृत्यु के समय बताने आयेगा वे उनको धोखा दे रहे हैं।

परमदयाल जी महाराज ने अपने जीवन में सच्चाई को अपना कर यह साबित कर दिया कि हरएक व्यक्ति सच्चाई पर चलकर अपने पारिवारिक जीवन में सफल होता हुआ भी परमतत्त्व को प्राप्त कर सकता है।

उन्होंने मुझे सच्चाई पर चलाते हुए इस प्रकार से अपने अनुभव के आधार पर और अपने ज्ञान की पृष्ठभूमि में सत्संग देने का आदेश दिया कि मैं इस बात को साबित कर सकूँ कि लोक और परलोक एक दूसरे के विरोधी नहीं हैं। राधास्वामी शब्द का अर्थ भी यही है, राधा लोक है और स्वामी परलोक है। मुझे हर ओर से सहयोग मिल रहा है। मेरे सत्संगों के दौरे का मक़सद उस सच्चाई का प्रचार करना है जो फ़कीर बाबा ने मुझे दी है और जिसका मैंने साक्षात्कार किया है। उन्होंने अपने अन्तिम सत्संग में अमेरिका में मुझे कहा था "तुम उस राधास्वामी अवस्था को पा जाओगे जहाँ मैं और तुम दोनों नहीं रहते, लेकिन इससे पहले तुम्हें सत्संगियों की सेवा का महान् कार्य करना है।" यही कारण है कि मुझे सत्संग के दौरे बहुत प्रिय हैं।

इस बार वसन्त का दौरा बहुत ही लम्बा रहा। नई दिल्ली से हम २५ जनवरी को हनमकुण्डा पहुँचे। आन्ध्र

प्रदेश के पूरे दौरे और सत्संग के प्रोग्राम का इन्तज़ाम हज़ूर आनन्द राव जी महाराज ने किया। मैं संक्षेप में यह कह सकता हूँ कि हनमकुण्डा में, हज़ूराबाद में, करीम नगर में, सिकन्दराबाद और हैदराबाद में सत्संगों का सिलसिला बहुत ही प्रभावशाली और हर प्रकार के सत्संगियों के लिए अद्भुत और लाभदायक था। इसी प्रकार मरा बम्बई, इलाहाबाद, बनारस और ख़ासकर गोरखपुर का दौरा बहुत ही अद्वितीय था। गोरखपुर में पहले ही सत्संग पर क़रीब ३ हज़ार व्यक्तियों ने भाग लिया। इस दौरे में मुझे अस्वस्थता के कारण कुछ जगहों का प्रोग्राम स्थगित करना पड़ा। फिर भी हम १५ मार्च को अपने प्रोग्राम के मुताबिक होशियारपुर पहुँच गये।

मैं १७ अप्रैल तक यहाँ रहूंगा और २० अप्रैल को विदेशी दौरे के लिए रवाना हो जाऊंगा। इससे पहले १८-१९ अप्रैल को सलवान पब्लिक स्कूल राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली में विशेष सत्संगों का आयोजन किया गया है। इस मौके पर सत्संगियों के रहने और खाने का प्रबन्ध होगा किन्तु सत्संगियों को अपना बिस्तर साथ लाना होगा। मुझे यह अच्छी तरह मालूम है कि आप सभी नामदान की व्याख्या के लिए इंतज़ार कर रहे थे, क्योंकि यह सन्देश बहुत लम्बा हो गया है इसलिए मैं इस बात के लिए क्षमा चाहता हूँ कि मासिक सन्देश में इस पहलू पर इस महाने प्रकाश नहीं डाला जा सकता। मैं इस विवेचन को निश्चित रूप से अगले मासिक सन्देश में पेश करूंगा। मैं आप सबको इस महीने की सद्भावना भेजता हूँ और चाहता हूँ कि आपको स्वास्थ्य, समृद्धि और शान्ति मिले।

आपका फ़कीरमय

मानव

इस बार मानवता मन्दिर में जो-जो गतिविधियां हु
उनका वर्णन संक्षेप में इस प्रकार है :—

१. वैसाखी के उत्सव के पश्चात् १२-१३ जुलाई १९८४ को "गुरु पूर्णिमा" का उत्सव मनाया गया। हजूर मानव दयाल जी महाराज खासकर अमेरिका से लौटे। सैकड़ों सत्संगियों ने सत्संग का लाभ उठाते हुए उनका आशीर्वाद लिया।

२. महाराज जी ने दशहरे के अवसर पर बहुत ही उच्च कोटि के सत्संग दिये जिससे सभी सत्संगी लाभान्वित हुए।

३. इसी प्रकार १८, १९-११-८४ को महाराज जी ने चण्डीगढ़ में परमसन्त परमदयाल जी महाराज के जन्म दिन के उपलक्ष्य में दो सत्संग दिये, जिससे चण्डीगढ़ और आसपास के सैकड़ों सत्संगियों ने लाभ उठाया।

४. इस वर्ष की विशेष घटना A.R.E. Virginia, U.S.A. के ३२ व्यक्तियों की टोली का भारत में आना और २० दिन तक महाराज जी की देखरेख में भारत के तीर्थस्थानों का दौरा करना और महाराज जी के सत्संगों का लाभ उठाना था।

५. इस बार महाराज जी के टूर प्रोग्राम में भी सब जगहों पर भारी संख्या में सत्संगियों ने सत्संगों का लाभ उठाया। दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज के राधास्वामी धाम पर शिवरात्रि के उपलक्ष्य में एक सत्संग का आयोजन किया गया जिसमें गोपीगंज,

वाराणसी, इलाहाबाद, लखनऊ, गोरखपुर इत्यादि के सैकड़ों सत्संगियों ने लाभ उठाया। सबसे महत्त्व-पूर्ण घटना यह हुई कि धाम के जीर्णोद्धार के लिए वहाँ पर स्थायी तौर पर सत्संग इत्यादि कराने के लिए एक समिति का गठन किया गया ताकि भविष्य में राधास्वामी धाम विश्व का एक आध्यात्मिक केन्द्र बन सके।

६. महाराज जी का वसन्त का दौरा बहुत ही सफल रहा, जिसके लिए हम सबको गर्व है।

७. शिक्षा के क्षेत्र में शिवदेव राव केन्द्र ने इस वर्ष बहुत ही उन्नति की है। शिशुओं को व्यावहारिक दृष्टि से आदर्श बालक बनाने का नया प्रयोग किया गया है, जिससे बालकों के माता-पिता बहुत ही प्रसन्न हैं। इस वर्ष से इस विद्यालय में शिक्षा की मौण्टेसरी शैली का आरम्भ किया गया है, जिससे बालकों को सहज शिक्षा दी जायेगी। विद्यालय की इस उन्नति का श्रेय कुमारी साधना सक्सेना M.A., B.Ed. और सेक्रेटरी श्री नारायण दास डोगरा को है।

—: महत्त्वपूर्ण सूचना :—

परमसन्त हज़ूर मानव दयाल जी महाराज दिनांक २२-६-८५ को सायंकाल ५ बजे तथा २३-६-८५ को प्रातः ८-३० बजे सलवान पब्लिक स्कूल, राजेन्द्र नगर, देहली में सत्संग प्रवचन फ़रमायेंगे।

जनरल सेक्रेटरी
मानवता मन्दिर, होशियारपुर (पंजाब)।

प्रार्थना

राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।
अलख अगम और अनामी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।
परम, सन्त का रूप धरा, जीवों पर उपकार किया।
सीधा सच्चा मार्ग दिया, आये धुर पद धामी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।
बन कर आये परम फ़कीर, हरने सब जीवों की पीर।
परम दयालु दानी वीर, नाम दान के दानी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।
राम भी हो और कृष्ण भी तुम।
तुम महावीर और बुद्ध गौतम।
अक्षर ब्रह्म और पुरुषोत्तम, सब नामों में अनामी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।
मानवता का किया प्रचार, निज अनुभव का दे दिया सार।
ऐसे गुरु को बारम्बार, नमामि नमामि नमामि।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।
दाता दयाल के प्यारे तुम मानव के रखवारे तुम।
निर्गण और सगुण भी तुम, सब के अन्तर्यामी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।

मानवता मन्दिर में अगला मासिक सत्संग 19-5-85 को होग ।

आवश्यक सूचना

हज़ूर मानव दयाल जी महाराज के आदेशानुसार सभी सत्संगियों को सूचित किया जाता है कि वे किसी भी ऐसे व्यक्ति को धन राशि या उपहार न दें जो कर्मचारी या गैरकर्मचारी होने के नाते मानवता मन्दिर से सम्बन्धित है, या रह चका है ।

Regd. No. 26265/74
MANAV MANDIR

MAY 10th 1985
NWHSP—7

ADDRESS

To

934. Sh, Chilver Narsim-
ulu Muneem P.O. Tq.
Banswada Distt: Nizamabad
A.P.

Phone : 2022

From :

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR-146001

Shiv Dev Rao Press Manavta Mandir, Hoshiarpur (Pb.)